स्वदेशी पत्रिका

अ नु क्र म

वर्ष–24, अंक–11
कार्तिक–मार्गशीर्ष 2073, नवंबर 2016

संपादक
अजेय भारती

पृष्ठ सज्जा एवं टंकन
सुदामा दीक्षित

कार्यालय
धर्मक्षेत्र, सेक्टर–8, बाबू गेनू मार्ग रामकृष्णपुरम्, नयी दिल्ली–110022
से प्रकाशित
दूरभाष : 011–26184595
स्वदेशी जागरण समिति की ओर से ईश्वर दास महाजन द्वारा कॉम्पीटेंट बाइन्डर्स (प्रिंटिंग यूनिट), नवीन शाहदरा, दिल्ली–32 से मुद्रित।

आवरण कथा – पृष्ठ–6

चीन का गहराता संकट और चीनी वस्तुओं का बहिष्कार

प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा

1 कवर पेज
2 कवर द्वितीय पेज

10 आवरण कथा-2
चीनी माल के बहिष्कार के मायने
.... डॉ. अश्वनी महाजन

12 कृषि
कीमत नहीं, आय चाहिए
.... डॉ. देविंदर शर्मा

14 ज्वलंत मुद्दा
आतंक के विरुद्ध एकजुट देश – शिखंडी ही अलग
.... डॉ. सूर्य प्रकाश अग्रवाल

17 संस्मरण
महर्षि वाल्मीकि
.... डॉ. विजय वशिष्ठ

19 दर्शन
पहचाने निज गौरव को!
.... डॉ. राजीव कुमार

22 विचार
डिजिटल इकानोमी का कैसे करें सामना
.... डॉ. भरत झुनझुनवाला

24 प्राकृतिक संपदा
जंगलों के अभाव में कैसे जिएंगे हम
.... ज्ञानेन्द्र रावत

25 मुद्दा
आराम की थैली में बिमारियों का खतरा
.... रेणु पुराणिक

27 आयुर्वेद
आहार विधि–विधान
.... वैद्या हेतल दव

32 रिपोर्ट
स्वदेशी मेला – दिल्ली

34 व्हाटसएप
रोचक प्रसंग

पाठकनामा/उन्होंने कहा 4
समाचार परिक्रमा 35-38

कवर तृतीय पेज 39
कवर चतुर्थ पेज 40

पाठकनामा

''स्वदेशी वस्तु नहीं, चिन्तन है''

भारत ने अपने एक हजार साल की गुलामी में अपनी सनातन संस्कृति को छिन्न–भिन्न होते देखा है। आज भी पश्चिमी सभ्यता भारत पर हावी होती चली जा रही है। युवा पूर्ण रूप से पश्चिमी सभ्यता को अपनाते चला जा रहा हैं और स्वदेशी वस्तुओं एवं स्वदेशी भाषा को छोड़ रहे हैं। जबकि स्वदेशी एक ऐसा विकल्प है जिसके माध्यम से हम देश की काया बदल सकते है। भाषा और भेषज में भी स्वदेशी का ही उपयोग करें, हिंदी और संस्कृत भाषा विश्व की महानतम और वैज्ञानिक भाषा है, यह वैज्ञानिकों और नासा ने भी माना है। प्रश्न उठता है कि स्वदेशी क्या है?–"स्वदेशी वस्तु नहीं चिंतन है। स्वदेशी तंत्र है–भारतीय जीवन का, स्वदेशी मंत्र है–सुख शांति का, स्वदेशी शस्त्र है–समय की क्रांति का, स्वदेशी समाधान है–बेरोजगारी का, स्वदेशी कवच है–शोषण से बचने का, स्वदेशी सम्मान है–श्रमशीलता का, स्वदेशी संरक्षक है–प्रकृति पर्यावरण का, स्वदेशी आंदोलन है–सादगी का, स्वदेशी संग्राम है–जीवन मरण का, स्वदेशी आग है–अनाचार को भस्म करने का, स्वदेशी आधार है–समाज की सेवा का, स्वदेशी उपचार है–मानवता के पतन का, स्वदेशी उत्थान है–समाज व राष्ट्र का, स्वदेशी ही स्वालंबन है–जीवन का।

"स्वदेशी में क्या–क्या? भाषा, भूषा (पहनावा), भेषज (औषधियाँ), शिक्षा, रीति–रिवाज, भौतिक उपयोग की वस्तुएं, कृषि, न्याय व्यवस्था आदि।"

किसी भी देश को यदि आर्थिक, सामाजिक, तकनीकी, सुरक्षा आदि क्षेत्र में समर्थ व महाशक्ति बनाना है, तो स्वदेशी मंत्र को अपनाना ही होगा, इसके अलावा दूसरा कोई मार्ग नहीं। विदेशी बैसाखियों पर कोई भी देश ज्यादा दिन तक नहीं टिक सकता। अंग्रेजों के आने के पहले हमारा भारत हर क्षेत्र में विकसित व महाशक्ति था एवं विश्व गुरू कहलाता था। अंग्रेजों के शासनकाल में मैकाले को संपूर्ण भारत भरण के दौरान कोई भिखारी नहीं मिला, जो यह बताता है कि उस समय हमारी आर्थिक स्थिति कितनी सुदृढ़ थी। फिर मैकाले ने भारत की गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था को आमूलचूल बदल दिया।

अतः हमें अपने दैनिक जीवन के उपयोग में आने वाली वस्तुओं में स्वदेशी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। इससे देश की अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी और देश विकास करेगा।

महेन्द्र सिंह चौहान, *इंदौर, म.प्र.*

*****

आवश्यक नहीं कि इस अंक के भीतर प्रस्तुत लेखकों के विचार स्वदेशी पत्रिका के संपादक मंडल के विचारों से मेल खाते हों। पाठकों की जानकारी के लिए उन्हें यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

संपादकीय कार्यालय

''धर्मक्षेत्र'' शिव शक्ति मन्दिर, सैक्टर–8, रामकृष्णपुरम्, नयी दिल्ली–110022

दूरभाष : 011–26184595 • ई–मेल : swadeshipatrika@rediffmail.com

अगर आप घर बैठे स्वदेशी पत्रिका चाहते हैं तो डिमांड ड्राफ्ट, मनीऑर्डर अथवा चेक द्वारा शुल्क *'स्वदेशी पत्रिका'* दिल्ली के नाम भेजने का कष्ट करें।

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 150 रुपए

आजीवन सदस्यता शुल्कः 15,00 रुपए

यदि शुल्क भेजने के उपरांत भी आपको पत्रिका समय पर उपलब्ध नहीं हो पा रही है तो तुरंत पत्रिका कार्यालय को सूचित करें।

या आप सीधे बैंक ऑफ इंडिया, खाता नं. 602510110002740

IFSC : BKID 0006025 (Ramakrishnapuram)

ट्वीट्स

भारत में आर्थिक क्रांति लाने के लिए मोदी जी को बधाई देता हूं। पांच सौ और हजार के नोट बंद करने के फैसले से उन सभी लोगों को सुकून मिला है जो भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ रहे थे।

श्री श्री रविशंकर जी महाराज

समानांतर अर्थव्यवस्था को खत्म करने के लिए संभवतः यह सबसे उपयुक्त कदम है। इससे अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी।

चंदा कोचर

आईसीआईसी बैंक प्रमुख

भ्रष्टाचार को खत्म करने के नाम पर हृदयविहीन प्रधानमंत्री ने एक तुगलकी फरमान जारी किया है।

ममता बनर्जी

मुख्यमंत्री, पश्चिम बंगाल

सरकार की घोषित मंशा का हम समर्थन करते हैं, लेकिन इसे लागू करना बहुत कठिन होगा।

पी. चिदंबरम्

पूर्व वित्तमंत्री

सं
पा
द
की
य

काला धन पर प्रहार

मजबूत फैसलों से ही इतिहास लिखा जा सकता है। लगभग ढाई साल के कार्यकाल में प्रधानमंत्री मोदी ने कई मौकों पर यह सिद्ध किया कि देशहित में कड़े फैसले लेने में कदापि नहीं हिचकते। 500 और 1000 के नोटों का प्रचलन बंद करने का फैसला, न सिर्फ ऐतिहासिक है, बल्कि यह राष्ट्र को नई दिशा देने वाला है। आतंकवाद की जड़ पर प्रहार तो है ही, साथ ही देश को दीमक की तरह खा रहे काले धन का सम्मूल नष्ट करने का भी यह बेहद सकारात्मक प्रयास है। युवा वर्ग को यह संदेश भी है कि बौद्धिक और शारीरिक क्षमता का उपयोग कर नैतिक तरीके से अच्छा जीवन बसर किया जा सकता है। बड़े नोटों के साथ बड़े–बड़े भ्रष्टाचार तो होते ही हैं, दुश्मन देश नकली नोटों का प्रसार कर उल्टे इन्हीं नोटों की मदद से देश के खिलाफ आतंकवाद का अभियान चलाते हैं। इन्हीं बड़े नोटों के जरिये राजनीति को प्रभावित या दूषित करने का भी अभियान चलाया जाता है। जाहिर है इनको खत्म करने का प्रस्ताव और इस पर अड़िग फैसला आसान नहीं था। क्योंकि कुल मुद्रा चलन का 86 फीसदी हिस्सा ये ही 500 और 1000 रुपये के नोट थे। इसके लिए तैयारी काफी पहले से ही शुरू कर दी गई थी। 500 और 2000 के नये नोटों का मुद्रण पिछले कई महीनों से चल रहा था। लेकिन इस बारे में सरकार की गोपनीयता कमाल की थी। प्रधानमंत्री द्वारा फैसले की जानकारी राष्ट्र के नाम प्रसारण के जरिये दिये जाने से पहले इसकी भनक किसी को नहीं लगी। जिसके कारण काला धन इक्टठा करने वालों को संभलने का भी मौका नहीं मिला। प्रधानमंत्री मोदी के इस एक फैसले से 5 लाख करोड़ रुपये के अनुमानित काले धन का कुछ हिस्सा अर्थव्यवस्था में वापस आ जाएगा और कुछ हिस्सा हमेशा के लिए चलन से बाहर हो जाएगा। काला धन जितनी मात्रा में भी अर्थव्यवस्था में आएगा, उस पर सरकार भारी कर लगाएगी, लोगों को दंडित करेगी। इससे लाखों लोगों के मन में यह बात घर करेगी कि अपनी ही मुद्रा का अनैतिक संचय ना सिर्फ देशहित के खिलाफ है, बल्कि इसके कारण अपनी ही तरक्की बाधित होती है। प्रधानमंत्री मोदी का यह एक फैसला लोगों को ईमानदारी से काम करने को प्रेरित करेगा ही, जनता के बीच यह संदेश भी जाएगा कि यह सरकार पैसे वालों के दबाव में चलने वाली नहीं है। चाहे यह दबाव राजनीति क्षेत्र का हो, या फिर व्यापार व उद्योग क्षेत्र का। यह फैसला आतंकवादियों और उनकी मदद करने वाले देशों के लिए भी संदेश है कि भारत विरोधी उनके अभियान के दिन अब लदने वाले हैं। नकली मुद्रा के जरिये देश को नागरिक, सामरिक और आर्थिक नुकसान पहुंचाने के उनके प्रयास अब धरे रह जाएगें। खासकर पाकिस्तान को यह सबक मिल गया है कि भारत की सरकार और यहां के लोग उनकी हर चाल को विफल करने में सक्षम और तत्पर हैं। अब तक प्रचलन में रहे 500 और 1000 के नोटों को प्रतिबंधित करने के इस फैसले का कोई भी प्रतिकूल असर आम आदमी, किसान या मध्य आय वर्ग के लागों पर नहीं पड़ने वाला। ना तो सरकार नोटों के बदलने पर कोई असुविधा होने देगी और ना ही उन्हें आयकर अधिकारियों का कोपभाजन बनने देगी। चुनावों में धन बल का प्रयोग कम होते ही बाहुबल का प्रयोग अपने आप घट जायेगा। फिर स्वच्छ छवि और साफ चरित्र के लोगों को चुनाव लड़ने में कोई बाधा नहीं होगी और इस तरह से राजनीति का शुद्धीकरण भी हो जाएगा। लेकिन ऐसा समझना भी ठीक नहीं है कि केवल एक फैसले से देश का चरित्र पूरी तरह बदल जाएगा। फिर से काला धन इकट्ठा नहीं होगा या भ्रष्टाचार पूरी तरह से बंद हो जाएगा। देश बदलने के लिए प्रधानमंत्री के स्तर पर कई और सुधारों की आवश्यकता होगी। अफसरशाही, पुलिस व्यवस्था और न्याय प्रणाली में भी व्यापक सुधार की आवश्यकता होगी। अभी तक के अनुभव तो यही बताते हैं कि भ्रष्टाचार के सिस्टम को बनाने और उसे चलाने में सरकारी अफसरों का पूरा हाथ रहा है। पिछले कुछ सालों में हजारों लाखों करोड़ के घोटाले, बैंकिंग लेनदेन के जरिये और ऑनलाइन भुगतान के जरिये ही हुए हैं। नागरिकों से पूरी नैतिकता और ईमानदारी की अपेक्षा तभी की जा सकती है, जब उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के पर्याप्त अवसर उन्हें दिये जाये। 125 करोड़ की आबादी में 65 फीसदी युवाओं को उनकी योग्यता और क्षमता के अनुसार काम मिले और काम के अनुसार उन्हें उचित दाम मिले। सामाजिक सुरक्षा के दायरे को और विस्तृत करने की आवश्यकता होगी, ताकि लोगों को अपने वर्तमान के साथ–साथ अपने भविष्य को लेकर आशंकित ना होना पड़े। उद्योग व व्यापार जगत को रिश्वत से पूरी तरह मुक्त करना पड़ेगा। जब तक रिश्वत का बाजार चलेगा, तब तक काला धन का संचय बंद नहीं होगा। बैंकिंग व्यवस्था को भी नये सिरे से दुरूस्त करना पडेगा। क्योंकि पहले से ही आर्थिक तंगी झेल रहे लाखों उद्यमी पूंजी के लिए बैंकों पर ही पूरी तरह आश्रित होंगे। नकदी पर नकेल के बाद अब मुमकिन नहीं होगा कि वह निजी स्रोतों से कोई पूंजी प्राप्त कर सके। यदि सरकार ने इस मोर्चे पर कोई ठोस पहल नहीं की तो मुद्रा चलन पर की गई इस कठोर कार्यवाही का नकारात्मक असर सीधे रोजगार पर पड़ेगा। इससे देश में अराजकता का ही माहौल बनेगा। प्रधानमंत्री ने जो दवा दी है वह बेहद कड़वी है। यदि इससे देश तरक्की करता है, आम आदमी को सम्मान के साथ जीवन जीने का अवसर प्राप्त होता है, भारत की मुद्रा को डॉलर या पौंड की तरह सम्मान मिलता है और देश के खिलाफ आतंकवादियों की कार्यवाही बंद हो जाती है, तो यह कड़वी दवा कुछ दिन बाद मीठे अनुभव में जरूर बदल जायेगी।

चीन का गहराता संकट और चीनी वस्तुओं का बहिष्कार

पूरी चीनी अर्थव्यवस्था आज उसके घरेलू उत्पाद के 250 प्रतिशत ऋण के बोझ तले चरमराने को है। इन भारी ऋणों के बोझ से दबी कंपनियों के साथ ही चीन के सारे बैंकों सहित उसका मुद्रा तंत्र, उद्योग व वाणिज्य सब कुछ डूब सकता है। –
प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा

चीन, आज संपूर्ण विश्व में स्थायी शांति, मानवाधिकारों की रक्षा, आतंकवाद के उन्मूलन, पर्यावरण संरक्षण एवं सामरिक संतुलन लिये गंभीर चुनौती बना हुआ है। लेकिन, आज वह स्वयं एक गंभीर आर्थिक व वित्तीय ज्वालामुखी के ऊपर बैठा है। वर्ष 2008 में अमेरिकी मेल्ट डाउन से अधिक भयावह मेल्ट डाउन अर्थात आर्थिक संकट वहां मुंह बाये उसे निगलने को खड़ा है। आज कंपनियां 180 खरब डालर अर्थात 18 ट्रिलियन डालर (12060 खरब अर्थात 1206 लाख करोड़ रूपये तुल्य) कर्ज में डूबी हुयी हैं। यह राशि उनके सकल घरेलू उत्पाद की 170 प्रतिशत है। पूरी चीनी अर्थव्यवस्था आज उसके घरेलू उत्पाद के 250 प्रतिशत ऋण के बोझ तले चरमराने को है। इन भारी ऋणों के बोझ से दबी कंपनियों के साथ ही चीन के सारे बैंकों सहित उसका मुद्रा तंत्र, उद्योग व वाणिज्य सब कुछ डूब सकता है। यदि अगले एक वर्ष और चीनी उत्पादों की बिक्री घटती रही, यह होना ही है। लेकिन यदि हम जो चीनी वस्तुएं खरीदते हैं, उन्हें खरीदना हमने जारी रखा और चीनी उद्यम बच गए, तो चीनी अर्थव्यवस्था इस पूरे संकट से अत्यंत सहजता से पार पा जायेगी, थोड़ा समय और चीनी माल ही रहा तो। चीन ने इस पूरे संकट से पार पाने की योजना की घोषणा भी 10 अक्टूबर 2016 को कर ही दी है। अब वह उसकी कुछ अकुशल कंपनियों को अपनी मौत मर जाने देगा और कुशल कंपनियां, जिनके उत्पाद विश्व भर में बिकते हैं, उनके ऋण को पूंजी में बदल देगा। कंपनी को ऋण पर ब्याज चुकाना होता है और किश्त भी प्रतिमाह चुकानी होती है। लेकिन इस नवीन प्रस्ताव के अनुरूप उस ऋण को पूंजी में बदलते ही (debt-equity

swap) कंपनी पर से किश्त व ब्याज के भुगतान का दायित्व समाप्त हो जाता है। ऐसे में आज की मंदी में भी वह कंपनी अपनी उत्पादन क्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं कर पाने पर भी जीवित रह सकती है, क्योंकि उसे अब न तो किश्त चुकानी है और न ही ब्याज। लेकिन यदि तब भी उसकी बिक्री नहीं हुयी तो उसे (कंपनी को) बंद होना ही है। यदि चीनी माल का हमने पूर्ण बहिष्कार कर दिया और विश्व में भी हमने चीन की पर्यावरणक्षरण, मानवाधिकार हनन, आतंकवाद का संपोषण एवं विश्व शांति के संबंध में खड़ी की जा रही चुनौतियों का स्मरण कराकर सोशल मीडिया पर चीनी वस्तुओं के बहिष्कार का आवाहन करें तो अधिकांश चीनी कंपनियां बंद होनी ही है। ऋण को पूंजी में बदलने के बाद भी बंद होगी। ऐसे में चीन के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के 170 प्रतिशत तक पहुंच चुके कंपनी ऋणों का दो तिहाई अर्थात उसके सकल घरेलू उत्पाद तुल्य 120 खरब डालर (12 ट्रिलियन डॉलर) का डूबना तो निश्चित ही है। चीन में कुल बकाया ऋणों की राशि तो आज 280 खरब डालर अर्थात (28 ट्रिलियन डालर) अर्थात उसके सकल घरेलू उत्पाद के 250 प्रतिशत तक पहुंच गयी है। यह राशि अमरीका व जापान के संयुक्त वाणिज्यिक बैंकिंग तंत्र के तुल्य है। यदि वर्तमान में चीन ने अपनी कंपनी ऋणों की पुनर्रचना, जिसमें ऋणों को पूंजी में परिवर्तन भी सम्मिलित है, के सहारे अपने बैंकिंग तंत्र व बड़ी प्रतिष्ठित कंपनियों के उत्पादन तंत्र को बचा लिया तो वह 3–5 वर्ष में अमरीकी अर्थव्यवस्था को भी पीछे छोड़ विश्व की क्रमांक एक की आर्थिक शक्ति व सामरिक शक्ति बन कर खड़ा होगा।

दूसरी ओर अभी जब चीन की अधिकांश कंपनियां व संपूर्ण बैकिंग तंत्र चरमराने को है। ऐसे में यदि हम चीनी वस्तुओं को खरीदना बंद कर देंगे व विश्व में भी ऐसा ही आवाहन करें तो उसका उत्पादन तंत्र व बैंकिंग तंत्र ध्वस्त होगा, निर्यात घटेंगे, विदेशी व्यापार में घाटा भी होगा, विदेशी मुद्रा भण्डार चुक जायेंगे और विश्व चैन की सांस लेगा। भारत का निकट पड़ोसी होने से चीन का सबल होना, भारत के लिये सर्वाधिक संकट कारक होगा।

चीन में कुल बकाया ऋणों की राशि आज 280 खरब डालर अर्थात (28 ट्रिलियन डालर) अर्थात उसके सकल घरेलू उत्पाद के 250 प्रतिशत तक पहुंच गयी है। यह राशि अमरीका व जापान के संयुक्त वाणिज्यिक बैंकिंग तंत्र के तुल्य है।

आज चीन की सर्वाधिक शत्रुतापूर्ण कार्यवाहियां भारत के विरूद्ध है। हाल ही में उसने अरूणाचल व उत्तराखण्ड में भारत की सीमा में हमारे नहरों व सड़कों आदि के निर्माण आदि कई कार्यों को बाधित किया है। वर्ष में 300–400 बार वह सीमा का अतिक्रमण करता है, संयुक्त राष्ट्र संघ में आतंकवाद के मामलों में भारत के प्रस्तावों के विरूद्ध वीटो का उपयोग कर रहा है। आणविक आपूर्ति समूह (Nuclear Suppliers Group) में भारत के प्रवेश का विरोध किया है। पाक अधिकृत कश्मीर में भारत के विरोध के बाद भी व्यापक स्तर पर निर्माण कर वहीं से 46 अरब डालर के चीन–पाक आर्थिक गलियारे का विकास कर रहा है। भारत में जल संकट उत्पन्न करने के लिये ब्रह्मपुत्र नदी का पानी रोक रहा है। सिंधु नदी का अतिरिक्त जल हम पाकिस्तान में जाने दें इसके लिये धमकियां दे रहा है। हाल ही में नवंबर 3, 2016 को अरूणाचल में सीमा से 29 किमी अंदर हमारा नहर निर्माण का कार्य रूकवाने का दुस्साहस किया है। वर्ष 2016 के कुछ प्रमुख सीमा अतिक्रमणों जिनका यहां उल्लेख किया जा रहा है वही चीन की भारत विरोधी गतिविधियों का आभास करा देते हैं–

1. **नवंबर 3, 2016 को अरूणाचल में भारतीय सीमा में नहर निर्माण में बाधा डालना:** चीनी सैनिकों ने बुधवार को वास्तविक नियंत्रण रेखा (एल.ए.सी.) के करीब भारतीय इलाके में चल रहे एक नहर के निर्माण को रुकवा दिया।

भारत के भारत तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) के 70 और चीन के 55 सैनिक कई घंटे तक आमने–सामने रहे। इस बीच, इंडियन एयरफोर्स को अरुणाचल प्रदेश में चीन सीमा से 29 किलोमीटर नजदीक अपने दुनिया के सबसे बड़े मिलिट्री एयरक्राफ्ट सी–17 ग्लोबमास्टर को उतारना पड़ा। ग्लोबमास्टर को 6200 फीट की ऊंचाई पर सिर्फ 4200 फीट लंबे इलाके में उतरना पड़ा। वहां चीनी सैनिकों ने यहां तक कह दिया कि भारत को लद्दाख में LAC के पास कंस्ट्रक्शन से पहले चीन से अनुमति लेनी चाहिए थी।

बुधवार की इस घटना में दोनों देशों के सैनिकों ने फ्लैग लगाकर पोजिशन तक ले ली थी। लेकिन, भारतीय जवानों ने भी चीनी सैनिकों को आगे नहीं बढ़ने दिया। इसी प्रकार 19 जुलाई को उत्तराखंड के चमोली में भी चीनी सैनिक नहर का काम रुकवा चुके हैं। तब भी भारतीय जवानों ने उन्हें वापस भेज दिया था। वर्ष 2014 में भी लद्दाख के निलुंग नाले का काम चीनी सैनिकों ने रुकवाकर मजदूरों के टेंटों को नुकसान पहुंचाया था।

चीन वर्ष में कुल 300– 400 बार तक घुसपैठ कर लेता है। अनेक क्षेत्रों में वह इंच दर इंच करके कई क्षेत्रों में स्थायी रूप से भी आगे बढ़ रहा है।

2. अरूणाचल में सितंबर 9, 2016 घुसपैठः चीन पहले भारतीय सीमा में स्थानीय लोगों को आतंकित कर पलायन को विवश करता है। उसके बाद ऐसे निर्जन क्षेत्रों में घुसपैठ कर वहां अपने सुरक्षा बलों के अस्थायी कैम्प बना लेता है। ऐसी ही उसने अभी अरूणाचल प्रदेश के अन्जा जिले की प्लम चौकी तक एक निर्जन क्षेत्र में सीमा पार 45 किमी भारतीय सीमा में घुसकर अस्थायी कैम्प व आशियाने भी बना लिये। सीमा में इतनी गहराई तक आने के बाद भारतीय सुरक्षा बलों द्वारा क्षेत्र खाली करने को कहने पर इस क्षेत्र को अपना (चीनीयों का) बताया। भारतीय सुरक्षा बलों द्वारा चीनी सैनिकों को अत्यंत कड़ा रूख अपनाने पर 4 दिन बाद 13 जून को उस क्षेत्र को खाली किया।

3. जून 10, 2016 को 250 सैनिकों की घुसपैठः अरूणाचल प्रदेश के ही कामेंग जिले के यागत्से क्षेत्र में जून 10, 2016 को चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के 250 जवानों ने घुसपैठ की। वहां सीमा क्षेत्र में गश्त का काम चीनी बोर्डर गार्ड्स का है, चीनी सैनिकों का वहां आना सुनियोजित घुसपैठ ही कही जा सकती है। भारत–तिब्बत सीमा पुलिस के जवानों द्वारा कड़ा रूख अपनाने के बाद ही वे लौटे हैं। इसी अवधि में चीन ने 48 सदस्यीय आणविक आपूर्ति समूह में प्रवेश के विरोध में भी लगा हुआ था।

4. मार्च 8, 2016 को फिंगर VIII–सिरजेप–I से 5.5 किमी घुसपैठः इसी प्रकार के लेह लद्दाख क्षेत्र की ओर भार ठाकुग चौकी से 5.5 किमी अंदर तक चार वाहनों व भारी शस्त्रास्त्रों साथ चीनी प्लाटून ने घुसपैठ करके भारतीय बलों पर भारी दबाव उत्पन्न किया। इनमें एक कर्नल व दो मेजर टेंक के अधिकारी दो हल्के वाहन एक मध्यम व एक भारी वाहन था। यह क्षेत्र पेगांग झील के पास पड़ता है, जहां वे आये दिन तनाव पैदा करते रहते हैं।

5. जुलाई 2016 में उत्तराखण्ड में घुसपैठः चीनी सैनिकों ने उत्तराखण्ड के चमोली जिले के बारहोती क्षेत्र में 80 वर्ग किमी के चारागाह क्षेत्र में घुसपैठ कर वहां भी तनाव उत्पन्न करने का प्रयास किया। चीन के साथ तनाव न हो, इसलिये वहां भारतीय सुरक्षा बल बिना शस्त्र व बिना गणवेश के ही गश्त करत हैं। वैसे भारत को इतना संकुचित व सिमटा रहना भी उचित नहीं है। इस क्षेत्र में चीन ने 2013 व 2014 में भी कई बार घुसपैठ की है और हमारी वायु सीमा का भी अतिक्रमण किया है।

इस प्रकार चीन वर्ष में कुल 300–400 बार तक घुसपैठ कर लेता है। अनेक क्षेत्रों में वह इंच दर इंच करके कई क्षेत्रों में स्थायी रूप से भी आगे बढ़ रहा है। ऐसी घुसपैठों व दौलत बैग ओल्डी में 21 दिन तक रहकर भारत की ब्लेकमेलिंग की समीक्षा लेखक ने अपनी तीन अन्य पुस्तकों में किया है।

भारत के सीमा क्षेत्र में विकास की आवश्यकताः चीन ने पूरी 4057

किमी लम्बी भारत तिब्बत सीमा पर अत्यंत व्यवस्थित सड़कें रेलमार्ग, विद्युतीकरण व संचार साधनों का विकास कर लिया है। वह जब चाहे बड़े पैमाने पर सैन्य बल जमा कर सकता है। लेकिन अब वह भारतीय सीमा में किसी भी प्रकार की गतिविधी या हलचल होने पर वह अडंगा लगा देता है। इसलिये वहां के ग्रामीणों को भारी असुविधा होती है। सर्दी में रास्तों से बर्फ हटाने तक की व्यवस्था नहीं होने से ग्रामीण परेशानी में पलायन करने तक को विवश हो जाते हैं। चीन चाहता है इन सबसे चीन वहां के निवासियों को बताना चाहता है कि यहां वे अपने क्षेत्र में चीन का स्वागत करे तो ही उनके वहां सारी नागरिक सुविधायें विकसित होगी। इसलिये भारत को सीमा क्षेत्र में सब प्रकार की अवसरंचना व नागरिक सुविधायें द्रुत गति से विकसित करनी चाहिये। साथ ही चीन के उपरोक्त वर्णित आर्थिक संकट के आलोक में उसे सही पाठ पढ़ाने के लिये चीनी वस्तुओं का पूर्ण बहिष्कार भी कर देना चाहिये।

चीन का आर्थिक सशक्तिकरण अनुचितः चीनी वस्तुओं की खरीद से चीन का आर्थिक व सामरिक सशक्तिकरण भारत के लिये सर्वाधिक चुनौतिपूर्ण होगा और हमें अपने संसाधन विकास के स्थान पर चीन–पाक से सुरक्षा में लगाने होंगे। इसके लिये भारत को अपने अबाध विकास के लिये चीन पर आर्थिक अंकुश लगाना सर्वाधिक आवश्यक है। चीन द्वारा की जा रही अनवरत शत्रुतापूर्ण कार्यवाहियों के उपरांत भी, भारत द्वारा चीन को सर्वाधिक व्यापार सुविधाएं देना और भी आत्मघाती कदम है। देश का सर्वाधिक 51 अरब डालर (3.5 लाख करोड़ रूपयों) का व्यापार घाटा, आज केवल चीन के साथ ही है। चीन से घोषित रूप में 4.25 लाख करोड़ रूपये व बड़ी मात्रा में अघोषित व कम बिल का माल भी देश में आ रहा है। आज देश में 5–6 लाख करोड़ रूपये का माल देश में आ रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि चीन का जो आज देश में हम 5–6 लाख करोड़ रूपये का माल आयात करते हैं, उसे हमें तत्काल बंद करना चाहिये। देश की जनता आज चीनी माल खरीदना बंद कर दे, यह चीन के प्रति हमारा सर्वोत्तम कदम सिद्ध होगा। अतएवं आज जब चीन एक आर्थिक, वित्तीय, बैंकिंग व कार्पोरेट संकट के ज्वालामुखी पर बैठा है, चीनी वस्तुओं का परित्याग ही इस संकट में विस्फोट की संभावना निश्चित करेगा। इससे चीन की संपूर्ण विश्व के लिए संकट उपजाने वाली गतिविधियों पर भी अंकुश लग सकेगा एवं विश्वभर में फैलते पर्यावरण संकट, विश्व के विभिन्न भागों में मानवाधिकारों के हनन और आतंकवाद पर नियंत्रण संभव होने से संपूर्ण विश्व की मानवता राहत की सांस लेगी। ❑❑

:: सदस्यता संबंधी सूचना ::

अधिक जानकारी के लिए देखें : http://swadeshionline.in/

मान्यवर,

स्वदेशी पत्रिका आज देश में चल रहे स्वदेशी आंदोलनों का स्थापित प्रतीक बन चुकी है। पिछले कई वर्षों से स्वदेशी पत्रिका ने असंगत एवं एकतरफा वैश्वीकरण, जनविरोधी आर्थिक उदारीकरण के विरोध एवं वैकल्पिक और रचनात्मक स्वदेशी आंदोलन के पक्ष में एक सक्रिय प्रहरी के नाते हमेशा आपको जागरूक बनाया है एवं आपसे संवाद स्थापित किया है। विगत कालखंड में इन सभी मुद्दों पर हमें आप जैसे सजग पाठकों का अपेक्षित सहयोग भी मिलता रहा है और भविष्य में भी मिलेगा ऐसा, विश्वास है।

आपसे आग्रह है कि स्वदेशी पत्रिका की आपकी सदस्यता अवधि यदि समाप्त हो गई हो तो कृपया पिछले समय से आगामी वर्ष तक की राशि धनादेश (मनीआर्डर), चेक एवं मांग पत्र (डिमांड ड्राफ्ट) के माध्यम से शीघ्र भेजने की कृपा करें। पत्रिका के लिफाफे के उपर चिपकाए गए पते की प्रथम पंक्ति में सदस्यता अवधि अंकित है। आप अपनी सदस्यता राशि ''स्वदेशी पत्रिका'' के नाम पत्रिका के कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। सदस्यता अद्यतन न हो पाने की स्थिति में वित्तीय कारणों से पत्रिका आगे जारी रखना कठिन होगा।

सदस्यता शुल्क निम्न प्रकार है :–

स्वदेशी पत्रिका	वार्षिक	आजीवन
हिन्दी	150 रुपए	1500/– रुपए
अंग्रेजी	150 रुपए	1500/– रुपए

हमें आपका सहयोग स्वदेशी आंदोलन को राष्ट्रव्यापी एवं जनोन्मुखी बनाने में प्रमुख भूमिका निभाएगा। कृपया स्वदेशी पत्रिका स्वयं भी पढ़ें एवं अन्य को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें। पत्रिका के संबंध में अपना निष्पक्ष विचार हमें अवश्य भेजें।

आप सीधे बैंक ऑफ इंडिया, खाता नं. 602510110002740, IFSC : BKID- 0006025 (Ramakrishnapuram) में जमा करवा सकते हैं और उसकी रसीद और अपना पता आप कार्यालय में अवश्य भेजे।

स्वदेशी पत्रिका कार्यालय, 'धर्मक्षेत्र' शिव शक्ति मंदिर, सैक्टर–8, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22

चीनी माल के बहिष्कार के मायने

समाचार पत्रों की रपटों और बाजारों से मिल रहे समाचारों के अनुसार देश भर में चीनी माल के बहिष्कार के कारण चीन की सामान की बिक्री 20 से 25 प्रतिशत कम हुई है। यह कहा जा रहा है कि जिन व्यापारियों ने पहले से चीन का माल आयात कर रखा था, जनता के बहिष्कार के कारण उन्हें भारी घाटा उठाना पड़ा है। ऐसे व्यापारियों का यह भी कहना है कि जनता के रूख को देखते हुए अब वो अगली बार से चीन से माल आयात नहीं करेंगे। चीन द्वारा कुख्यात आतंकवादी मसूद अजहर को अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादी घोषित करने के प्रस्ताव पर वीटो लगाने और ब्रह्मपुत्र का पानी रोकने से नाराज भारत की जनता ने चीनी माल के बहिष्कार का जो फैसला लिया, उसके परिणाम स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। समाचारपत्रों की इन रिपोर्टों का कहना है कि सोशल मिडिया जैसे वाट्सएप, फेसबुक इत्यादि के माध्यम से जनता को की गई अपीलों और जनाक्रोश के कारण ऐसा हुआ है। हालांकि सोशल मीडिया पर चीनी माल के बहिष्कार हेतु प्रधानमंत्री जी के नाम से भी अपील चल रही थी, सरकार की ओर से उसे नकारा गया है, लेकिन उसके बावजूद जनता के बीच चीनी माल के बहिष्कार हेतु उत्साह में कोई कमी नहीं आई है।

कई सालों से चीन से आयात बढ़ता ही जा रहा था। जहां वर्ष 1987–88 में चीन से कुल आयात मात्र 150 लाख (0.015 अरब) डालर ही था, जो 2015–16 तक बढ़ते हुए 61.7 अरब डालर तक पहुंच गया। उधर चीन को होने वाले निर्यात 2015–16 में भी मात्र 9 अरब डालर ही थे, जिसका असर यह हुआ कि चीन से भारत का व्यापार घाटा 2015–16 में बढ़कर 52.7 अरब डालर तक पहुंच गया।

– डॉ. अश्वनी महाजन

गौरतलब है कि पिछले कई सालों से चीन से आयात बढ़ता ही जा रहा था। जहां वर्ष 1987–88 में चीन से कुल आयात मात्र 150 लाख (0.015 अरब) डालर ही था, जो 2015–16 तक बढ़ते हुए 61.7 अरब डालर तक पहुंच गया। उधर चीन को होने वाले निर्यात 2015–16 में भी मात्र 9 अरब डालर ही थे, जिसका असर यह हुआ कि चीन से भारत का व्यापार घाटा 2015–16 में बढ़कर 52.7 अरब डालर तक पहुंच गया। भारत का कुल व्यापार घाटा 2015–16 में 118.4 अरब डालर था, यानि देखा जाए तो अकेले चीन से व्यापार का घाटा कुल घाटे का 45 प्रतिशत था।

वर्ष 2000–01 से 2002–03 के अपवाद को छोड़ दिया जाए तो देश लगातार विदेशी भुगतान घाटे में फंसता चला गया और 2013–14 तक हमारा व्यापार घाटा 195 अरब डालर और भुगतान घाटा 90 अरब डालर तक पहुंच चुका था। हाल ही के वर्षों में घटती तेल

कीमतों के चलते हमारा भुगतान घाटा और व्यापार घाटा दोनों कम हुए हैं, तो भी देश में व्यापार घाटा 2015–16 में 118.4 अरब डालर तो था ही। विदेशी भुगतानों के घाटे के चलते देश को मजबूरन विदेशी पूंजी और विदेशी कर्ज का सहारा लेना पड़ता है, जिसका दुरगामी प्रभाव भारत के भुगतान घाटे पर भी पड़ता है। देश पर कर्ज का बोझ बढ़ता जाता है और विदेशी कंपनियां भारी मात्रा में रॉयल्टी, ब्याज, डिविडेंट और वेतन के नाम पर विदेशी मुद्रा देश से बाहर ले जाती हैं। वर्ष 2001 में जहां देश पर मात्र 101 अरब डालर का ही कर्ज था, 2016 में बढ़ते हुए 485.6 अरब डालर तक पहुंच गया। इस कर्ज पर हर साल भारी ब्याज भी चुकाना पड़ता है, जो हमारे कर्ज को और बढ़ा देता है।

अब जब भारत की जनता ने चीन के सामान का बहिष्कार करने का निर्णय लिया है, वो भी दीपावली के अवसर पर, तो इसका असर चीन से आने वाले आयात पर अवश्य पड़ेगा। यह सही है कि चीन से कुछ सामान तैयार वस्तुओं के रूप में और कुछ सामान मध्यवर्ती वस्तुओं, कलपुर्जों और मशीनरी इत्यादि के रूप में भी आता है। अभी बहिष्कार का दौर उपभोक्ता वस्तुओं तक सीमित है, लेकिन यदि जनता की भावनाएं इसी प्रकार से उद्वेलित रही तो संभव है कि बहिष्कार का असर कलपुर्जों और मशीनरी के आयात पर भी पड़ने लगे। इससे देश की अर्थव्यवस्था पर कई प्रकार के अच्छे प्रभाव पड़ेंगे। पहला प्रभाव सीधे–सीधे आयात और उसके कारण व्यापार घाटे पर पड़ेगा। यदि चीन से आने वाले सामान का आयात 20 प्रतिशत भी कम होता है तो इससे हमारे चीन के साथ व्यापार घाटे पर कम से कम 10 अरब डालर का असर होगा, जिससे हमारी विदेशी मुद्रा बचेगी। चीन से आयात घटने का दूसरा सबसे अधिक महत्वपूर्ण असर यह होगा कि इससे देश में उन वस्तुओं का उत्पादन बढ़ने लगेगा, जिनकी आपूर्ति चीनी माल से होती थी। इससे देश में उत्पादन और रोजगार दोनों में वृद्धि होगी। इस बहिष्कार का तीसरा महत्वपूर्ण असर यह होगा कि डालर की मांग घटने से रूपए पर दबाव कम होगा और रूपया मजबूती की ओर आगे बढ़ेगा और वर्तमान में रूपया जो 66 से 67 रूपए प्रति डालर पर है वो सुधरता हुआ 62 रूपए प्रति डालर तक आ सकता है। रूपए का सुधरना देश के लिए अत्यंत मंगलकारी सिद्ध हो सकता है, क्योंकि रूपए के सुधरने से हमारे तेल का आयात बिल भी कम होता है, पेट्रोल और अन्य आयात सस्ते होते हैं और इन सबसे महंगाई भी कम होती है। आज जबकि हमारे आयात कुल जीडीपी के लगभग 25 प्रतिशत के आसपास हैं, रूपए में 10 प्रतिशत की मजबूती महंगाई को 2.5 प्रतिशत कम करती है।

चीनी माल के बहिष्कार के चीन पर प्रभाव

कुछ लोगों का कहना है कि चीन के कुल निर्यातों में से भारत को होने वाले निर्यात मात्र 3.4 प्रतिशत ही है, क्योंकि पिछले साल चीन के कुल निर्यात 1845 अरब डालर हैं, जिसमें से भारत को होने वाले निर्यात मात्र 61.7 अरब डालर के ही थे। लेकिन यहां हमें यह भी समझना होगा कि चीन जो पूरी दुनिया में भारी मात्रा में निर्यात करता था, 2007–08 में आई वैश्विक मंदी के बाद निर्यात के मामले में लगातार दबाव में है। वर्ष 2015 में उसके निर्यात लगातार घटते रहे और 2016 के पहले सात महीनों में उनमें थोड़ी वृद्धि होने से चीनी अर्थव्यवस्था पर दबाव कम हुआ। लेकिन 2016 के सितंबर माह में चीन के कस्टम विभाग के आकड़ों के अनुसार चीन के निर्यातों में पिछले साल की तुलना में 10 प्रतिशत की कमी हुई है। हालांकि चीनी सरकार का यह कहना है कि युआन के रूप में यह कमी 5.6 प्रतिशत की ही है, लेकिन हमें इस आकड़ें को भी ध्यान से देखना होगा कि जहां अच्छे समय में चीन का कुल व्यापार अधिशेष (सरपल्स) 627.5 अरब डालर तक पहुंच गया था, पिछले साल वह मात्र 420 अरब डालर तक गिर गया। चीन के कुल व्यापार अधिशेष (सरपल्स) का 12 प्रतिशत भारत से आता है। जानकारों का मानना है कि इससे चीनी युआन पर दबाव बढ़ रहा है। गौरतलब है कि चीनी युआन पिछले 6 वर्षों में सबसे कमजोर स्तर पर पहुंच गया है।

चीनी माल के बहिष्कार का जो उत्साह भारत की जनता के बीच देखने को मिल रहा है, वह अभूतपूर्व है। इससे पहले देश की जनता ने किसी भी परिस्थिति में किसी देश विशेष के संदर्भ में या वैश्विक आयातों के संदर्भ में इस तरह का रूख नहीं अपनाया था। चीन से आयात बढ़ने के कारण जब देश में उत्पादन और रोजगार घट रहा था और हमारा मैन्युफैक्चरिंग क्षेत्र अत्यधिक दबाव में था, तो भी आर्थिक विश्लेषक यही कहते रहे कि उपभोक्ता को जब सस्ता सामान मिल रहा है तो वो क्यों न खरीदे। आज जब चीनी माल के बहिष्कार के रूप में देश भक्ति का प्रकटीकरण हो रहा है, तो भी कुछ लोग उस पर यह कहकर टिप्पणी कर रहे हैं कि इससे चीन के साथ संबंध बिगड़ सकते हैं और इससे चीन को कोई नुकसान नहीं होगा, बल्कि भारत को नुकसान जरूर हो सकता है। लेकिन जिस प्रकार से चीनी मिडिया इस अभियान के प्रति प्रतिक्रिया दे रहा है, ऐसा लग रहा है कि जनता द्वारा इस बहिष्कार का असर चीन पर दिखने लगा है। दुनिया के दूसरे मुल्कों को भी इस बहिष्कार से सबक मिल सकता है, जो भारत को केवल बाजार के रूप में देखते हैं और भारत के विरोध में काम करने से बाज नहीं आते। ❑❑

कीमत नहीं, आय चाहिए

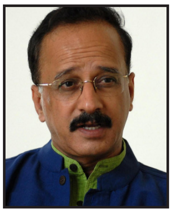

2011 की जनगणना के मुताबिक, हमारे देश में 50 फीसदी से ज्यादा किसान वास्तव में भूमिहीन हैं, जिसका मतलब है कि वे गैर–कषि मजदूरों की श्रेणी में आ गए हैं, जो वैधानिक न्यूनतम मजदूरी से वंचित रहेंगे और जिस बात ने मुझे हैरान किया, वह यह है कि अगर आर्थिक सर्वेक्षण–2016 के मुताबिक 17 राज्यों में खेतिहर परिवारों की औसत मासिक आय सालाना 20 हजार रुपये या मासिक 1,667 रुपये है, तो भूमिहीन किसानों को क्या मिलता होगा?

– देविंदर शर्मा

सितंबर माह में सरकार ने गैर–कृषि मजदूरों की न्यूनतम मजदूरी में 42 फीसदी का इजाफा किया, जिससे उनकी रोजाना मजदूरी मौजूदा 246 रुपये से बढ़कर 351 रुपये हो जाएगी और इस तरह उन्हें महीने में न्यूनतम 9,100 रुपये मिलेंगे। लेकिन ध्यान रहे, सरकार ने न्यूनतम मजदूरी में वृद्धि की घोषणा सिर्फ गैर–कृषि मजदूरों के लिए की है। हालांकि ट्रेड यूनियन इससे भी खुश नहीं हैं और वे 'सी' श्रेणी के कर्मचारियों के 18,000 रुपये न्यूनतम वैधानिक मजदूरी की मांग कर रही हैं। यहां सवाल उठता है कि यह निर्धारित न्यूनतम मजदूरी कृषि मजदूरों के लिए भी क्यों नहीं लागू की जानी चाहिए। कृषि मजदूर भी कड़ी मेहनत करते हैं, वे अक्सर बारह घंटे खटते हैं और उन्हें ज्यादा से ज्यादा मनरेगा की मजदूरी मिलती है। यह उचित नहीं है। 2011 की जनगणना के मुताबिक, हमारे देश में 50 फीसदी से ज्यादा किसान वास्तव में भूमिहीन हैं, जिसका मतलब है कि वे गैर–कृषि मजदूरों की श्रेणी में आ गए हैं, जो वैधानिक न्यूनतम मजदूरी से वंचित रहेंगे। और जिस बात ने मुझे हैरान किया, वह यह है कि अगर आर्थिक सर्वेक्षण–2016 के मुताबिक 17 राज्यों में खेतिहर परिवारों की औसत मासिक आय सालाना 20 हजार रुपये या मासिक 1,667 रुपये है, तो भूमिहीन किसानों को क्या मिलता होगा। शायद प्रति दिन 50 रुपये से भी कम। क्या जीविका चलाने के लिए यह मजदूरी पर्याप्त है?

यही मुख्य वजह है कि मैं एक अलग कृषक आय आयोग की मांग कर रहा हूं, जो गैर–कृषि मजदूरों की न्यूनतम मजदूरी तय करे। मुझसे अक्सर पूछा जाता है कि किसानों के लिए एक अलग आय आयोग क्यों, जबकि न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) उपलब्ध

कराने के लिए एक अलग मूल्य तंत्र पहले से ही मौजूद है। और वह भी तब, जब देश भर के किसान स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट को लागू करने की मांग कर रहे हैं, जिसमें किसानों को उत्पादन लागत पर 50 फीसदी मुनाफा देने की सिफारिश की गई है। फिर अलग आयोग की जरूरत क्या है?

बेशक मैं इससे सहमत हूं कि किसानों को सरकार द्वारा घोषित एमएसपी के हिस्से के रूप में 50 फीसदी का मुनाफा दिया जाना चाहिए, पर तथ्य यह है कि देश के मात्र छह फीसदी किसान ही एमएसपी का लाभ पाते हैं। शेष 94 फीसदी किसान बाजार की शक्तियों की दया पर निर्भर हैं। यही नहीं, विश्व व्यापार संगठन ने स्पष्ट कर दिया है कि खरीद मूल्य फसलों के कुल मूल्य से दस फीसदी से ज्यादा नहीं होना चाहिए, जो आगे एमएसपी में वृद्धि के विकल्प को प्रतिबंधित करता है। इससे स्पष्ट है कि 'मूल्य नीति' का समय खत्म हो गया है और इसकी जगह पर 'आय नीति' लागू की जानी चाहिए। जब मैं खरीद मूल्य की गणना के तरीके को देखता हूं, तो महसूस होता है कि यह मुश्किल से उत्पादन लागत के साथ दस फीसदी लाभ को पूरा करता है और वह भी प्रबंधकीय लागत के रूप में। दूसरी तरफ गैर–कृषि श्रमिकों की मजदूरी भारतीय श्रम सम्मेलन, 1957 के अनुसार निर्धारित की जाती है। उसके अनुसार न्यूनतम मजदूरी का निर्धारण न्यूनतम मानवीय जरूरतों के हिसाब से होना चाहिए।

वर्ष 1991 में सुप्रीम कोर्ट ने न्यूनतम मजदूरी के निर्धारण के लिए छह मापदंड तय किए थे–बच्चों की शिक्षा, चिकित्सीय जरूरत, न्यूनतम मनोरंजन समेत त्योहारों, समारोहों, वृद्धावस्था, शादी के प्रावधानों के लिए 25 फीसदी कुल मजदूरी में शामिल किया जाना चाहिए। इसके अलावा, न्यूनतम मजदूरी में महंगाई भत्ता का प्रावधान होना चाहिए, जिसे साल में दो बार संशोधित किया जाए और उसे मूल वेतन में शामिल नहीं किया जाना चाहिए। मेरी समझ में नहीं आता कि कृषि लागत एवं मूल्य आयोग (सीएसीपी), जो हर वर्ष 23 फसलों के लिए एमएसपी निर्धारित करता है, वह सुप्रीम कोर्ट के बताए इन छह मापदंडों का पालन क्यों नहीं करता। क्या आपने कभी सुना है कि किसानों को ये भत्ते दिए जा रहे हैं? चूंकि एमएसपी ही किसानों की आय का एकमात्र तरीका है, मैं कोई कारण नहीं देखता कि क्यों किसानों को न्यूनतम मानवीय जरूरतों से वंचित किया जाना चाहिए, जिसे खरीद मूल्य में शामिल किए जाने की जरूरत है।

मैं केंद्रीय कर्मियों को दिए जाने वाले 108 भत्तों की बात नहीं कर रहा, बल्कि मैं तो सिर्फ चार भत्ते किसानों को देने की बात कर रहा हूं–शिक्षा, चिकित्सा, आवास और यात्रा। जब से हरित क्रांति की शुरुआत हुई, तब से किसान जरूरत–आधारित खरीद मूल्य से वंचित हैं। हैरानी नहीं कि हर बीतते वर्ष के साथ कृषि संकट बढ़ रहा है। बीते 20 वर्षों में तीन लाख से ज्यादा किसानों ने खुदकुशी कर ली।

किसान नेताओं को समझना चाहिए कि स्वामीनाथन कमेटी की रिपोर्ट लागू करने भर से न्याय नहीं होगा। इससे मात्र छह फीसदी किसानों को फायदा होगा, जो एमएसपी पर अपनी फसल बेचने में सक्षम हैं, बाकी 94 फीसदी किसान घाटे में रहेंगे। और चूंकि विश्व व्यापार संगठन द्वारा निर्धारित सीमा से आगे एमएसपी नहीं बढ़ाई जा सकती, नतीजतन सरकार किसानों को वास्तविक मूल्य देने से लगातार इंकार करती रहेगी। इसलिए जरूरी है कि किसानों के लिए एक आय आयोग का गठन किया जाए, जो किसान परिवारों के लिए न्यूनतम निश्चित मासिक आय सुनिश्चित करे। स्वयं डॉ. स्वामीनाथन ने किसान आय आयोग की मांग की थी।

हर बीतते वर्ष के साथ कृषि संकट बढ़ रहा है। बीते २० वर्षों में तीन लाख से ज्यादा किसानों ने खुदकुशी कर ली।

ट्रेड यूनियनें न्यूनतम मजदूरी कानून, 1948 में संशोधन की मांग कर रही हैं, जिसमें ठेका मजदूर भी आते हैं। किसान नेताओं को समझना चाहिए कि मजदूरों के हक के लिए दस ट्रेड यूनियनें एकजुट हुई हैं। उन्हें भी आय के मुद्दे और सीएसीपी के संदर्भ शर्तों में बदलाव के लिए एक आम समझ तैयार करनी चाहिए। सीएसीपी को अब सिर्फ फसलों के उत्पादन लागत की गणना नहीं करनी चाहिए, बल्कि न्यूनतम मानवीय जरूरतों के आधार पर मासिक आय पैकेज निर्धारित करने का निर्देश देना चाहिए। इसलिए सीएसीपी का नाम बदलकर किसान आय एवं कल्याण आयोग कर देना चाहिए। ❑❑

आतंक के विरुद्ध एकजुट देश - शिखंडी ही अलग

गत 15–20 वर्षों से आंतकवादी घटनाओं ने भारत देश को तबाह कर रखा है। देश में आतंकवादी घटनाओं की जांच होती है। कुछ लोगों की गिरफ्तारी होती है, कुछ पकड़कर छोड दिये जाते है। देश में कुछ आस्तीन के सांप हैं, जिनको भारत पाकिस्तान की सीमा पर आतंकवादी घटनाओं में शहीद होते हमारी बहादुर सेना के बहादुर सिपाही दिखाई नहीं देते। सुरक्षा बलों पर अभद्र भाषा का प्रयोग करते हुए पत्थर, गोली व ग्रेनेड फैंकने वाले दिखाई नहीं देते, अपने बचाव में सिपाही के द्वारा चलाई पेलेट गन, पावा सेल दिखाई देती है। सभी मुसलमान आंतकवादी नहीं होते है, परंतु पकड़ में आये सभी आंतकवादी मुसलमान जरुर होते है। कभी देबबंदी व बरेलवियों ने ऐसे आतंकवादी को ईस्लाम से खारिज करने के लिए कोई फतवा जारी नहीं किया, न कभी कहा गया कि ऐसे आंतकवादियों का ईस्लाम से कोई मतलब नहीं है। उनके शवों को पेडों पर लटका दिया जाये, जिससे कम से कम, कम होते गिद्धों की संख्या तो बढ़ पायेगी या फिर उनके शवों को भारत की धरती में न दफनाकर समुंद्र में फेंक दिया जाय अथवा कुडे के ढ़ेर में जला दिया जाय। अब समय आ गया है जब ईस्लाम समर्थकों को सामने आकर आतंकवादियों के विरुद्ध कड़ा रुख अपनाना पडेगा। केवल यह कहने से कि आंतकवादियों का कोई मजहब नहीं होता, से काम चलने वाला नहीं है, क्योंकि वे मजहब का नाम लेकर ही जिहाद के नाम पर आतंकवादी घटना लगातार कर रहे हैं। आंतक के नाम पर आतंकवादी ईस्लाम को बदनाम कर रहे हैं।

अब समय आ गया है जब ईस्लाम समर्थकों को सामने आकर आतंकवादियों के विरुद्ध कड़ा रुख अपनाना पडेगा। केवल यह कहने से कि आंतकवादियों का कोई मजहब नहीं होता, से काम चलने वाला नहीं है, क्योंकि वे मजहब का नाम लेकर ही जिहाद के नाम पर आतंकवादी घटना लगातार कर रहे हैं। आंतक के नाम पर आतंकवादी ईस्लाम को बदनाम कर रहे हैं।

– डा. सुर्य प्रकाश अग्रवाल

देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक बार कहा था कि हम अपने पडोसियों को नहीं बदल सकते है। इसी बात को निभाते हुए उन्होंने अपने शपथ ग्रहण समारोह में अपने सभी पडोसी देशों के राष्ट्राध्यक्षों को समारोह में आमंत्रित किया भी था व सभी से दोस्ती का हाथ बढ़ाया भी था। मित्रता का यह हाथ पडोसी पाकिस्तान की ओर भी बढाया गया था। मित्रता के इस हाथ को पाकिस्तान के द्वारा पहचाना ही नहीं गया और लगातार दुश्मन के सदृश्य

बर्ताव ही पाकिस्तान के द्वारा किया गया। मुंबई का हमला हो, पठानकोट व उरी पर हमला हो, सभी में सबूतों के साथ पाकिस्तान की संलिप्तता देखी गई एवं पाकिस्तान को भारत के द्वारा बताया भी गया। भारत सरकार फिर भी पाकिस्तान की तरफ दोस्ती का हाथ बढाती रही, परंतु पाकिस्तान कश्मीर का राग ही अलापता रहा व भारत के इस व्यवहार को भारत की कमजोरी समझता रहा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को इस बात पर देशवासियों की आलोचना भी सहनी पडी कि वे इन प्रतिदिन होती आतंकवादी घटनाओं का कोई प्रतिशोध क्यों नहीं ले रहे है? देश में, विशेषकर पठानकोट व उरी की आतंकवादी घटनाओं से भारत में सरकार के प्रति एक हताशा व निराशा का वातावरण ही बन गया था, परंतु दिनांक 29 सितंबर 2016 की प्रातः देशवासियों में एक नवीन उत्साह का माहौल बन गया, जब यह सूचना आयी कि भारतीय कमांडोज ने पाकिस्तान की सीमा पीओके में 6 किमी. अंदर घुसकर आंतकवादियों के 6 ठिकानों पर हमला कर 56 आंतकवादियों को मार गिराया है और भारत के सभी 150 कमांडोज आपरेशन सर्जिकल स्ट्राइक करके सकुशल भारत में वापिस लौट आये हैं। भारत की इस सैनिक कार्यवाही से पाकिस्तान में एक बौखलाहट का माहौल बन गया। वहां की सेना व राजनेताओं ने यह कहना शुरु कर दिया कि भारत की तरफ से ऐसा कोई सर्जिकल स्ट्राइक हुआ ही नहीं जिसकी देखा–देखी व पाकिस्तान के समर्थन में भारत में पाकिस्तानी पिठ्ठुओं ने पाकिस्तान के स्वर में स्वर मिलाना शुरु कर दिया। कुछ राजनेताओं व कुछ बुद्धिजीवियों ने भारत में रहते हुए मेंढकों की तरह टर्राना शुरु कर दिया।

पीओके में घुसकर की गई सर्जिकल स्ट्राइक की कार्यवाही से भारत देश में चारों ओर एक गर्व का वातावरण बन गया। संपूर्ण देश में जहां पहले सरकार की आलोचना हो रही थी वहीं अब सराहना होने लगी। भारत ने आतंकवादियों की तरफ कोई कार्यवाही तो की। पहली बार आतंक के विरुद्ध भारतीय युद्ध की झलक, शक्तिशाली रुप से सामने आई। भारत ने खुलकर इस कार्यवाही को घोषित किया। अमरीका सहित विश्व के लगभग सभी देशों ने भारत की इस कार्रवाही की खुलकर सराहना व समर्थन किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कूटनीतिक प्रयासों के कारण ही पाकिस्तान विश्व बिरादरी में अलग–थलग पड़ गया।

पहली बार आतंक के विरुद्ध भारतीय युद्ध की झलक, शक्तिशाली रुप से सामने आई। भारत ने खुलकर इस कार्यवाही को घोषित किया।

भारतीय सैनिकों की भुजाएं अब फडक रही है। उन्हें यह सदैव शिकायत बनी रहती थी कि हमारे इतने अधिक सैनिक ही क्यों शहीद होते हैं? अब सैनिकों की प्रशंसा के शब्द ही कम पड गये। आतंक का कारखाना बने पाकिस्तान की हालत म्यांमार से भी बदतर हो गई है। भारत द्वारा सर्जिकल स्ट्राइक कोई भावावेश में उठाया गया कदम नहीं था। उरी में केम्प में सोते भारतीय जवानों पर पाकिस्तान से आये आतंकवादियों के द्वारा कायराना हमला करके 20 जवानों को शहीद कर दिया गया। यह भारत के द्वारा युद्ध करने का पर्याप्त व स्वाभाविक कारण बन सकता था।

देश में प्रमुख रुप से कांग्रेस सहित सभी छोटे–मोटे राजनीतिक दल युद्ध करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को उकसा रहे थे व युद्ध न करने के लिए लानत भेज रहे थे। परंतु प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दिमाग में था कि यदि युद्ध शुरु हुआ तो देश की आर्थिक हालत खराब हो सकती है और देश का विकास एकदम से रुक जायेगा। देश के परिस्थिति कुछ इस प्रकार की बन गई थी कि युद्ध व विकास दोनों ही आवश्यक थे। आगामी 2019 के चुनावों में विपक्षी दलों के द्वारा विकास न करने का ठीकरा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सिर फोड दिया जाता। सर्जिकल स्ट्राइक से पाकिस्तान व आतंकवादियों को जबाब भी दे दिया और भारत का विकास भी अवरुद्ध नहीं हो पाया। उत्तेजना में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व जवान डू–व–डाई पर उतर सकते थे परंतु सेना का कठोर अनुशासन और सरकार की आक्रमक, किंतु सुझबूझ भरी नीति के कारण ही भारत को स्वदेश व विदेश में सराहना व समर्थन मिल रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को उनका कथन–**पाकिस्तान को उसी की भाषा में जबाब देना चाहिए।** बार–बार याद दिलाया जा रहा था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार ने पाकिस्तान को विश्व में अलग–थलग की नई योजना बनाई। यही योजना सर्जिकल स्ट्राइक के महत्वपूर्ण फैसले का कारण बनी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार के द्वारा पाकिस्तान के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिए – प्रथम–प्रत्येक आंतकवादी हमले के उपरांत पाकिस्तान

को सुबूतों का डोजियर (कागजी सुबूतों का पुलिंदा) भेजने की परंपरा को बंद किया जाये, क्योंकि पठानकोट हमले के बाद पाकिस्तान की शरीफ सरकार ने झूठ गडकर सुबूतों की गंभीरता हमेशा के लिए समाप्त ही कर दी। द्वितीय– खून व पानी साथ–साथ नहीं बह सकते, कहकर सिंधू नदी के पानी का मुदद्ा उठाया। तृतीय– भारत की विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज के द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे विश्व मंच पर पाकिस्तान को अकेला करने की बात कही गयी। चतुर्थ– सार्क सम्म्लेन का बहिष्कार किया गया जिसका समर्थन उसके अन्य सदस्यों ने भी किया। पंचम– सार्क देशों को भारत के पक्ष में करके सार्क सम्मेलन को ही स्थगित करवाना। षठम्– सेना व सुरक्षा सलाहकारों के माध्यम से सैन्य कार्यवाही के बारे में विचार व विकल्प ढूंढना कि सेना का दबदबा कायम हो जाये किन्तु युद्ध भडकाने जैसा भी प्रतीत न हो। आक्रमक सुरक्षा का सबसे प्रभावी तरीका निकला सर्जिकल स्ट्राइक और इसके साथ ही भारत के धैर्य की लम्बी प्रतिक्षा की रणनीति समाप्त हुई। देशवासियों की भावनाओं का सम्मान राजनीति ने किया। स्ट्रेटेजी, डिप्लोमेसी और मिलिट्री तीनों मोर्चो पर पाकिस्तान विश्व के समाने बेहद कमजोर व लाचार साबित कर दिया गया। इसके लिए सेना जहां सेल्यूट की हकदार है वहीं प्रधानमंत्री

भारत का उदद्ेश्य आतंकवादियों का सफाया करना मात्र था, न कि पाकिस्तान से युद्ध करना।

नरेंद्र मोदी व उनकी सरकार की साहसिक व रणनीतिक विजय भी कहा जायेगा। भारत का उदद्ेश्य आतंकवादियों का सफाया करना मात्र था, न कि पाकिस्तान से युद्ध करना।

अब ध्यान यह देना है कि पाकिस्तान प्रतिक्रिया में आतंकवादियों को शह देकर उरी जैसी कार्यवाही दुबारा से न करा दे क्योंकि सब तरह की नाकाबंदियों व सीमा पर व्यापक सुरक्षा उपायों के बाबजूद आतंकवादी जान हथेली पर रख कर घुसपैठ कर जाते है जिसको भारतीय सेना को रोक पाना बहुत मुश्किल कार्य हो गया है। अतः घुसपैठ रोकने के साथ–साथ देश में आंतकवादियों को पनाह देने की सिलिपिंग सेल मौजूद है जिनसे भी सुरक्षा बलों को निपटना पड़ेगा। पाकिस्तान अर्थात अपने जन्म 1947 से ही भारत के विरुद्ध कश्मीर को लेकर मोर्चा बांधता रहा है। बातचीत से ही रास्ता निकल सकता है। परंतु पाकिस्तान कश्मीर पर बात करना चाहता है भारत आंतकवाद पर। अतः कोई समाधान नजर नहीं आता। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार ने अब मांग करनी शुरु कर दी है कि पाकिस्तान भारत के क्षेत्र, जिसको पीओके कहा जाता है, को खाली करे और कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग स्वीकार करे। दोनों देशों में बातचीत का माहौल बनना अनिवार्य है। 1971 में जब भारत के पास पाकिस्तान में 92 हजार हारे हुए सिपाही युद्धबंदी थे, तक प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी पाकिस्तान से उन सिपाहियों की रिहाई को लेकर पीओके की मांग कर सकती थी। आंतकवाद व युद्ध के माहौल से भारत व पाकिस्तान का आर्थिक विकास अवरुद्ध हो रहा है। अतः पाकिस्तान को कश्मीर का मुदद्ा छोडना पडेगा, तभी बातचीत संभव हो सकती है।

अब देश में बहस इस बात को लेकर हो रही है कि सर्जिकल स्ट्राइक का श्रेय कौन ले? निसंकोच इसका श्रेय सेना व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को ही जाता है, क्योंकि अगर यह सर्जिकल स्ट्राइक की कार्यवाही फेल हो जाती और अधिक कमांडो शहीद हो जाते तो क्या विपक्षी राजनीतिक दल उसका दोष प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को नहीं देते?। क्या कांग्रस को 1965 व 1971 की युद्ध का लाभ चुनावों में नहीं मिला? ❑❑

लेखक सनातन धर्म महाविद्यालय मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) के अवकाश प्राप्त प्राचार्य है व स्वतंत्र लेखक व चिन्तक है तथा उनका विषय वाणिज्य है।

:: सूचना ::

स्वदेशी पत्रिका सम्राज्यवाद के खिलाफ एक सशक्त आवाज है। पत्रिका को ऐसे लोगों से प्रतिक्रियाएं, रिपोर्ट या आलेख की अपेक्षा है जो राष्ट्रहित में सोचते हैं और देश के स्वावलम्बन के लिए कुछ करने की इच्छा रखते है। जरूरी नहीं कि आप पत्रकार या लेखक ही हों, अपने आसपास से जुड़ी चीजों के प्रति आपकी संवदेना है और आप शब्दों में उसे लिख सकते है तो हमें अवश्य लिख भेजें। साथ ही स्वदेशी पत्रिका में छपे लेख आपको कैसे लगते हैं, क्या आप इसमें कुछ नए विषयों का समायोजन चाहते हैं कृपया हमें अवश्य अवगत कराएं। आपके विचारों को हम प्राथमिकता के साथ प्रकाशित करने का भी प्रयास करेंगे।

संपादक, स्वदेशी पत्रिका

'धर्मक्षेत्र', सेक्टर–8, बाबू गेनू मार्ग, रामकृष्णपुरम्, नयी दिल्ली–110022

महर्षि वाल्मीकि

(16 अक्टूबर वाल्मीकि जयंती)

कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम्
आरूह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्

(रामरक्षास्त्रोतम्–34)

कवितामयी डाली पर बैठकर मधुर अक्षरों वाले राम–राम इस मधुर नाम को कूजते हुए वाल्मीकिरूप कोकिल की मैं वंदना करता हूं।

महर्षि वाल्मीकि ब्राह्मण पुत्र थे, किन्तु वे किरातों के साथ रहकर बड़े हुए थे। उन किरातों का चरित्र अच्छा नहीं था, अतः कुसंग का प्रभाव इन पर पड़ा। इन्होंने शुद्रा से विवाह किया और उनसे बच्चे उत्पन्न किये। ये उनके पेट भरने के लिए लूट–खसोट और चोरी करते थे। एक बार उन्हें सप्तर्षियों का संग प्राप्त हुआ। सप्तर्षियों ने उन्हें मरा–मरा जपने की शिक्षा दी और कहा कि जब तक हम न लौटें, आप इस मंत्र का निरंतर जप करते रहना। एक हजार युग बीतने पर वे लौटे, तब तक इन पर वाल्मीक का ढ़ेर लग चुका था। ऋषियों ने कहा निकल आओ। तब उन्होंने नूतन शरीर से निकलकर उनकी अभ्यर्थना की, अब वे ब्रह्मर्षि बन गये थे।

श्रीराम वाल्मीकि संवाद–वनवास काल में श्रीराम सुन्दर वन तालाब देखते हुए वाल्मीकि जी के आश्रम में आये। पवित्र और सुन्दर आश्रम को देखते हुए प्रभु श्रीराम हर्षित हुए। भगवान के आगमन को सुनकर वाल्मीकि जी उन्हें लेने के लिए आगे आये। श्री रामचन्द्र जी की छवि देखकर मुनि के नेत्र शीतल हो गये। मुनि वाल्मीकि ने प्राण प्रिय अतिथि को पाकर उनके लिए मधुर कंद, मूल और फल मंगवाये। श्री सीता जी, लक्ष्मण जी और श्री राम जी ने फलों को खाया। तब भगवान श्री राम ने कहा –

देखि पाये मुनिराम तुम्हारे, भए सुकश्त सब सुफल हमारे।।
अब जहं राउर आभसु होई। मुनि उदबेगु न पावै कोई।।

अर्थात्– हे मुनिराज! आपके चरणों का दर्शन करने से आज हमारे सब पुण्य सफल हो गये। अब जहां आपकी आज्ञा हो और जहां कोई भी मुनि उद्वेग को प्राप्त नहीं हो, ऐसा

महर्षि वाल्मीकि जी के जन्म दिवस (16 अक्टूबर) पर उनको हार्दिक श्रद्धांजली यही होगी कि हम जाति–पांति, छूत–अछूत, ऊंच–नीच आदि के भेदभाव को समाप्त कर समरस समाज का निर्माण करें। हमारे इस राष्ट्र को यदि महान एवं समद्ध बनाना है तो हमें महर्षि वाल्मीकि जी के जीवन से प्रेरणा लेकर समाज में समरसता को बढ़ावा देना होगा

– **डॉ. विजय वशिष्ठ**

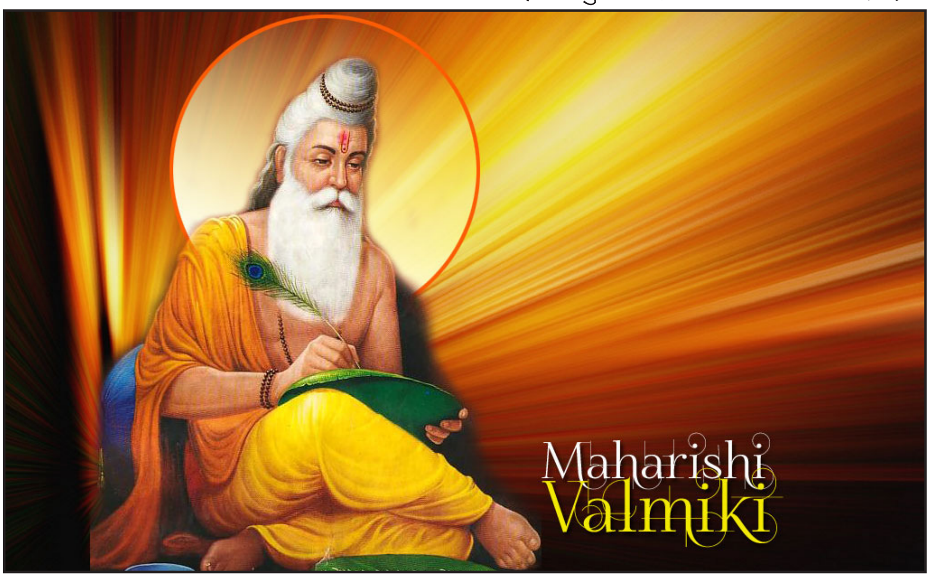

हृदय में समझकर– वह स्थान बतलाइये, जहां मैं, लक्ष्मण और सीता सहित जाऊं और वहां सुंदर कुटी बनाकर, हे दयालु, कुछ समय निवास करूं। तब वाल्मीकि जी ने कहा– आपने मुझसे पूछा कि मैं कहां रहूं? परंतु मैं पूछते संकुचाता हूं कि जहां आप न हो वह स्थान बता दीजिये? तब मैं आपके रहने के लिए स्थान दिखाऊं। यह सुनकर भगवान राम सकुचाकर मुस्कराये। तब वाल्मीकि जी हंसकर मीठी वाणी में बोले–

सबु करि मागहिं एक फलु राम चरन रति होऊं,
तिन्ह के मन मंदिर बसहु सिय रघुनंदन दोऊ।।

(129 अयोध्या काण्ड)

सब कर्म करके, सबका एकमात्र यही फल मांगते हैं कि श्रीरामचन्द्र जी के चरणों में हमारी प्रीति हो, उन लोगों के मनरूपी मंदिरों में सीताजी और आनंदित करने वाले आप दोनों बसिये/हे तात! जिनके स्वामी, सखा, पिता, माता और गुरू सब कुछ आप ही हैं, उनके मन रूपी मंदिर में सीता सहित आप दोनों भाई निवास कीजिये। जाति–पांति, धन, धर्म, बड़ाई, प्यारा परिवार और सुख देने वाला घर–**सबको छोड़कर जो केवल आपको ही हृदय में धारण किये रहता है, हे रघुनाथ जी! आप उसके हृदय में रहिये।** वाल्मीकि जी ने आगे कहा–

जाहि न चाहिए कबहुं, कछु तुम सन सहज सनेहु
बसहु निरंतर तासुमन, सो राउर निज गेहु।।

हे राम जी, जिसको कभी कुछ भी नहीं चाहिए और जिसका आपसे स्वाभाविक प्रेम है, आप उसके मन में निरंतर निवास कीजिये, वह आपका अपना घर है।

इस प्रकार मुनि श्रेष्ठ श्री वाल्मीकि जी ने श्री रामचंद्र जी को घर दिखाये। उनके प्रेमपूर्ण वचन श्रीराम जी को अच्छे लगे। फिर मुनि ने कहा– हे सूर्यकुल के स्वामी! सुनिये, अब मैं इस समय के लिए सुखदायक निवास स्थान बतलाता हूं। आप चित्रकूट पर्वत पर निवास कीजिये, वहां आपके लिए सब प्रकार की सुविधा है। श्रीराम जी चलिये और पर्वत श्रेष्ठ चित्रकूट को भी गौरव दीजिये। मुनि के कहने पर भगवान श्री राम ने चित्रकूट में निवास करने का निर्णय किया। श्री राम जी के आगमन का समाचार जब कोल–भीलों ने सुना तो वे ऐसे हर्षित हुए मानो नवों निधियां उनके घर पर ही आ गयी हों। इस संवाद से ऐसा लगता है कि मानो महर्षि वाल्मीकि ने भगवान राम को निवास करने का स्थान बताया हो – ये दोनों का स्वाभाविक प्रेम है।

आज के युग में शिक्षा और रण–कौशल इन दोनों की आवश्यकता है और महर्षि वाल्मीकि जी ने इन दोनों कार्यों को बहुत ही सहज भाव से किया है।

शिक्षण संस्थान की स्थापना– कुसंगति और सुसंगति मनुष्य के जीवन पर कितना परिवर्तन लाती है, इसकी प्रत्यक्ष अनुभूति महर्षि वाल्मीकि जी को प्राप्त थी। बचपन से ही अच्छे संस्कार डालने के लिए महर्षि वाल्मीकि ने गंगा के पावन तट पर विशाल शिक्षा संस्थान स्थापित किया था। जिसमें दस हजार छात्रों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था थी। रामायण में इन्हें कुलपति कहा गया है। इनकी आध्यात्मिक शिक्षा के उत्कृष्ट उदाहरण भारद्वाज और धनुर्वेद तथा गान कला के उदाहरण कुश और लव हैं। कुश और लव की रण–शिक्षा इतनी प्रखर थी कि इन दोनों भाईयों ने संपूर्ण राम सेना को पराजित कर शत्रुघन जी का मुकुट और पुष्पकलका करीट मां को भेंट किया तथा हनुमान और सुग्रीव को भी बंदी बना लिया था। ये गाने में इतने प्रवीण थे कि सुनने वाले आपा खो देते थे। शत्रुघन उनके सचिव और सैनिक उस गाने को सुनकर रातभर रोते ही रहे।

वे धर्मशास्त्र के इतने निष्णात थे कि इनके शिष्य लव कुश से जब माता सीता ने कहा– तुम लोगों ने श्री राम की सेना को मारकर अन्याय किया है। तब इन भाईयों ने विनीत शब्दों में कहा था– माताजी हम दोनों से अन्याय नहीं हुआ है। हमारे गुरू श्री वाल्मीकि जी ने पढ़ाते समय बतलाया था कि क्षात्र–धर्म के अनुसार पुत्र पिता से, भाई–भाई से और शिष्य गुरू से युद्ध कर सकता है, हां आपकी आज्ञा है, इसलिये सबको छोड़ देता हूं।

राम के नाम की महिमा – महर्षि वाल्मीकि ने भगवान श्रीराम से कहा था – भगवन मैं आपके नाम की महिमा का कोई वर्णन नहीं कर सकता। **उसी नाम के प्रभाव से मैं ब्रह्मर्षि बन गया।** आपके उस नाम का ही प्रभाव है कि मैं अपनी इन आंखों से सीता और लक्ष्मण के साथ आपको देख रहा हूं।

महर्षि वाल्मीकि जी के जन्म दिवस (16 अक्टूबर) पर उनको हार्दिक श्रद्धांजली यही होगी कि हम जाति–पांति, छूत–अछूत, ऊंच–नीच आदि के भेदभाव को समाप्त कर समरस समाज का निर्माण करें। हमारे इस राष्ट्र को यदि महान एवं समृद्ध बनाना है तो हमें महर्षि वाल्मीकि जी के जीवन से प्रेरणा लेकर समाज में समरसता को बढ़ावा देना होगा तथा युवकों में राष्ट्रभक्ति एवं रण–कौशल का भाव जागृत कर उन्हें लव–कुश बनने की प्रेरणा देनी होगी। आज के युग में शिक्षा और रण–कौशल इन दोनों की आवश्यकता है और महर्षि वाल्मीकि जी ने इन दोनों कार्यों को बहुत ही सहज भाव से किया है। आओ हम महर्षि वाल्मीकि जी की शिक्षा को ग्रहण कर राष्ट्र निर्माण के पथ पर अग्रसर हो।❑❑

पहचाने निज गौरव को!

विश्व के सर्वाधिक प्राचीन महान देश भारत की गौरव गाथा कहना या लिखना कोई सरल कार्य नहीं है। यहां जीवन का प्रत्येक क्षेत्र उत्कृष्टता से लबालब है। किंतु आज वातावरण को बनाने में बाह्य तत्वों के साथ हम एवं हमारे कर्णधार भी सहयोगी हो रहे हैं। विदेशी कृत्रिमता हमें भा रही है, आवरण के आकर्षण हमें मोड़ रहे है, हमें अपनी अंधी दौड़ में दौड़ाने में विदेशी सफल हो रहे हैं। लगता है हम अभी भी गुलाम है। वर्ष 1947 से पूर्व भले ही विदेशी शासन यहां रहा लेकिन हम सदैव संघर्षशील रहे, जबकि आज भले ही शासन अपना है लेकिन हमारी मनोवृत्ति गुलाम है।

हम विश्व की श्रेष्ठतम संस्कृति के स्वामी है। संस्कृति वहीं श्रेष्ठ है जिसमें संवेदनशीलता हो, मानवीय भाव हो। हम केवल मनुष्यों तक ही नहीं रूके, बल्कि सृष्टि के समस्त चराचर जीव–जंतुओं पर हमने दया दिखायी है। इनका भी पोषण हमारी संस्कृति ने किया है। पहली रोटी गाय को दो, अंतिम रोटी कुत्ते को, मछलियों व चीटियों को आटा, सांप को दूध आदि हमारी विशाल हृदयता के कुछ उदाहरण है। केवल जीवन की नहीं अपितु वनस्पति तक का संरक्षण हमारी संस्कृति में है। हम ही व्यवहार में ला पाये हैं–

'अयं निजः परो वेति, गणना लघुचेतसाम्।
उदारचस्तिानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।'

हमने ही धरती को माता कहा है। विश्व में माता–पिता ही है – 'माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या'।

हमारी संस्कृति त्याग की संस्कृति है। पश्चिम की तरह भोग की नहीं है। हमारे संस्कार

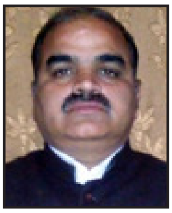

हम विश्व की श्रेष्ठतम संस्कति के स्वामी है। संस्कति वहीं श्रेष्ठ है जिसमें संवेदनशीलता हो, मानवीय भाव हो। हम केवल मनुष्यों तक ही नहीं रूके, बल्कि सष्टि के समस्त चराचर जीव–जंतुओं पर हमने दया दिखायी है। इनका भी पोषण हमारी संस्कति ने किया है।

– डॉ. राजीव कुमार

भौतिकवाद से दूर है। हम सब परस्पर एक दूसरे के लिए त्याग करते है। अतिथि देवो भवः– हमारे संस्कार है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने कहा भी है–

वहीं मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे।
यही पशु प्रवृत्ति है, कि आप आप की चरे।।

परिवार की व्यवस्था जितनी भारत में समृद्ध है, विश्व में कहीं नहीं है। हमारी ही मान्यता है कि जो हमें कुछ भी देता है उसे देव तुल्य मानना चाहिए। जैसे–सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, नदी, पर्वत, वृक्ष आदि संपूर्ण प्रकृति के हम ऋणी है। हम देवता की तरह मानकर इन्हें पूजते है। इनका शोषण करने की चेष्टा नहीं करते। विश्व जो पर्यावरण प्रदूषण के भीषण प्रकोप से घिरा हुआ है। इसी सूत्र में उसका हल है। हमने मनुष्य को पश्चिम की भांति केवल शरीर नहीं माना, इसलिए अभी तक हम भौतिकवाद से दूर है। आज विश्व के लोग मानने लगे है कि इस अशांति एवं तनाव के युग में कही शांति है तो वह भारतीय संस्कृति में है – यही है हमारा सांस्कृतिक गौरव।

भारत एक आध्यात्मिक देश है। अनेकता में एकता है हमारी विशेषता। नगर–नगर एवं ग्राम–ग्राम में मंदिर है, अनेक स्मारक है। सारनाथ, सांची के स्तूप, नालन्दा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालय अजन्ता, एलोरा एवं एलीफेटा की गुफाएं आदि हमारी वास्तुकला के प्रतीक है। प्रत्येक भवन

परिवार की व्यवस्था जितनी भारत में समृद्ध है, विश्व में कहीं नहीं है। हमारी ही मान्यता है कि जो हमें कुछ भी देता है, उसे देव तुल्य मानना चाहिए।

उत्कृष्ट कला की कथा है। जहां विश्व के कलाकार एवं वास्तुविद अभी तक भी नहीं पहुंच पाये हैं, वहीं हम हजारों वर्ष पूर्व थे।

भारत माता वीर प्रसूता रही है। यहां केवल पुरूष ही नहीं अपितु नारियों ने भी प्रत्येक क्षेत्र में वीरता के उदाकरा प्रस्तुत किय हैं। यथा–रानी दुर्गावती, रानी पद्मिनी, पन्नाधय, रानी लक्ष्मीबाई, राजमाता जीजाबाई, चेनम्मा आदि वीरता में शिरोमणि है। महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमार चौहान आदि साहित्य के क्षेत्र में एवं भक्ति के क्षेत्र में मीराबाई का नाम सभी को स्मरण है। अपनी अस्थियां भी समाज हित में समर्पित करने वाले दधीचि, अनेक महान ग्रंथों के रचनाकार महर्षि वेदव्यास, विश्व के प्रथम कवि बाल्मीकि जैसे अनेक ऋषि भारत में हुए है। रविदास, सूरदास, तुलसीदास, कबीर एवं रसखान जैसे महान संतों ने भारत की शोभा को द्विगुणित किया है।

स्वतंत्रता के बाद की पुरानुकरणी शिक्षा नीति के कारण आज हम यह भूल गये है कि हम सोने की चिड़िया थे। विश्व के अनेक लुटेरों की निगाह हम पर रहती थी और वे यहां से परास्त होकर लौटते थे। विश्व को विश्व करने का स्वप्न लेकर लगा सिकन्दर अपने उद्देश्य की ओर बढ़ता हुआ यूनान से भारत तो पहुंच गया, परंतु यहां युद्ध से उसका साहस टूट गया और वापिस हो लिया यूनान की ओर, इतना घायल कि अपने देश भी नहीं पहुंच सका।

कहा जाता है कि महान खगोलविद् वैज्ञानिक एवं नक्षत्रों ज्ञाता गौलिलियो ने 1602 में दूरबीन का अविष्कार किया था। परंतु इससे हजारों वर्ष पूर्व भारत में दूरबीन थी। चार सौ योजन दूर समुद्र के किनारे से यह देख लिया गया था कि लंका में अशोक वाटिका में वृक्ष के नीचे सीता माता बैठी है। आकाश में सीता का हरण कर ले जा रहे रावण को नीचे से पहचान लिया गया था। इस प्रकार का कोई यंत्र अवश्य रहा होगा।

कहते हैं कि मारकोनी ने रेडियो अर्थात् आकाशवाणी का अविष्कार किया परंतु विश्व को यह ज्ञात होना चाहिए कि हमारे यहां कब से यह विज्ञान एवं जानकारी उपलब्ध है। भगवान कृष्ण के समय में ही आकाशवाणी हुई थी कि जिस बहन को तू विदा कर रहा है, उसका आठवां गर्भ तेरा काल होगा। यह भी कहते हैं कि राईट बंधु ने हवाई जहाज का अविष्कार 1903 में किया जबकि सत्य है कि रामायण काल में श्री रामचन्द्र विमान से अयोध्या लौटे थे। वेयर्ड को दूरदर्शन का आविष्कार माना जाता है कि लेकिन हमें ज्ञात होना चाहिए कि महाभारत के युद्ध का वर्णन दूर बैठे अंधे धृतराष्ट्र को संजय ने सुनाया था। आज के वैज्ञानिक जो खोज रहे हैं वह हम पहले की खोज चुके हैं। हमारे ग्रंथ ऐसे प्रमाणों से भरे पड़े है लेकिन अस्वस्थ मानसिकता के कारण हम स्वयं उन्हें समझने को तैयार नहीं।

हम आज के वैज्ञानिक युग में देख लें – भारतीय वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु ने सर्वप्रथम खोज की थी कि पौधों में जीवन है। महान भारतीय गणितज्ञ रामानुजन को कौन नहीं जानता? सी. वी. रमन जिन्होंने 'पानी की सतह का रंग नीला क्यों?' की खोज की, जिसे रमन प्रभाव कहा गया। इनसे प्रभावित

होकर अंग्रेजों ने इन्हें सर की उपाधि से विभूषित किया। उनको विश्व में महान वैज्ञानिक ने नाते नोबेल पुरस्कार दिया गया। प्रो. बीरबल साहनी विश्व में जीवाश्म वनस्पति के जनक माने जाते है। डॉ. आत्माराम ने आप्टीकल ग्लास की खोज की। डॉ. विक्रम साराभाई ने अंतरिक्ष में अनुसंधान किया। डॉ. खुराना ने शरीर विज्ञान के क्षेत्र में शोध कर कृत्रिम जीन्स का अविष्कार किया। इन्हें भी नोबेल पुरस्कार से सम्मानिक किया गया। इन वैज्ञानिकों को विरासत में यह प्रतिभा मिली है। आवश्यकता है अपने ग्रंथों को पलटने की।

आज विभिन्न उपकरणों से सुसज्जित मौसम विभाग भी तत्कालिक मौसम की भविष्यवाणी गलत कर देता है, जबकि हमारे ज्योतिषाचार्य जो एक साधारण सी झोपड़ी में रहते है, कोई आधुनिक शिक्षा जिन्होंने नहीं ली, जिन पर बड़ी–बड़ी प्रयोगशालाएं नहीं है, आगामी कई वर्षों की घोषणा कर देते हैं। सूर्यग्रहण/चन्द्रग्रहण कब होगा?, कब और कहां वर्षा होगी? ठंड कितनी पड़ेगी? सूखा कहां होगा? हमारा ज्योतिष पूर्ण वैज्ञानिक है जिस ने जानने वाले ढकोसला कहते है।

विश्व में अनेक काल गणनाएं प्रचलित है, जो अधिकतम 2000 सालों के इतिहास की गवाह है। परंतु हमारी गणना लगभग 2 अरब वर्ष पुरानी है। हमारी प्राचीन गणना देखकर लोग सिहर उठते है।

इस समय कलियुग का 5117वां युगाब्द चल रहा है, जो महाभारत युद्ध के पश्चात शुरू हुआ है। हमारे यहां युग चार माने गये है, जिनके वर्षों की संख्या अलग निर्धारित है। जैसे– सतयुग–1728000 वर्ष, त्रेतायुग–1296000 वर्ष, द्वापर युग– 864000 वर्ष, कलियुग– 432000 वर्ष, योग–4320000 वर्ष।

अर्थात् एक चतुर्युगी की गणना

की जाए तब वह 4320000 वर्षों की होती है। ऐसी अनेक चतुर्युगी हमारी कालगणना की व्यतीत हो चुकी है। अतः यह गणना ही हमारी प्राचीनता का पर्याप्त प्रमाण है।

गणित के क्षेत्र में थोड़ा दृष्टिपात करें तो पायेंगे कि उनका जनक भारत ही है। अंक भारत ने ही दिये है। 0 से 9 तक के अंक हमारे है। भारत अंक पद्धति के अनुसार प्रत्येक अंक के दो मान है। एक निर्धारित मान, एक स्थानीय मान। भारतीय अंक पद्धति से प्रभावित होकर प्रो. हालस्टीड ने कहा 'शून्य का आविष्कार स्तुति योग्य है, इससे हमारी बुद्धि शक्तिशाली हुई है।'

1, 2, 3 यह अंग्रेजी अंक नहीं है। अंग्रेजी की लिपि I, II, III है और यह अंक रोमन में लिखे जाते हैं। 1,2,3 भारतीय अंक ही है जो पहले अरब लोगों ने अपनाये। अरब के लोगों ने इन्हें हिन्दसा कहा। भारतीय विद्वान आर्यभट्ट ने वर्गमूल, घनमूल जैसी विद्याओं का आविष्कार किया जो आज विश्व भर में प्रचलित है। पाई की कल्पना तथा मान के निर्धारण का श्रेय भी आर्यभट्ट को है। अगर भारत दशमलव की पद्धति ने देता तो शायद मानव चांद पर नहीं पहुंचता।

उपर्युक्त तथ्यों से परिचित लार्ड मैकाले ने कहा था, ''ईसा मसीह के

सभ्यता, धर्म और संस्कृति, ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में, साहित्य के क्षेत्र में, गणित और ज्योतिष आदि सभी में भारत गौरवशाली देश रहा है। यहां की भवन निर्माण, वास्तुकला, चित्रकला, शिल्पकला, आदि विश्व में अद्वितीय है।

कई शताब्दी पूर्व जब इंग्लैण्ड के लोग जानवरों की खाले पहनते थे, अपने शरीर पर चित्रकारियां बनाते थे और जंगलों में नंगे घूमते थे, उस समय भी भारत की सभ्यता चरम पर थी। सभ्यता, धर्म और संस्कृति, ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में, साहित्य के क्षेत्र में, गणित और ज्योतिष आदि सभी में भारत गौरवशाली देश रहा है। यहां की भवन निर्माण, वास्तुकला, चित्रकला, शिल्पकला, आदि विश्व में अद्वितीय है। निर्विवाद रूप से भारत–माता विश्व की विकसित सभ्यता की जननी होने के कारण जगतजननी का स्थान पाने की पूरी–पूरी अधिकारी है। ❑❑

डिजिटल इकानोमी का कैसे करें सामना

मोबाइल फोन बनाने वाली मशहूर कंपनी ऐप्पल के मुख्याधिकारी टिम कुक ने कहा है कि आने वाले समय में वे ''भारत को दूसरे चीन में परिवर्तित होते देख रहे हैं। ऐप्पल की आई फोन की बिक्री में गत वर्ष 50 प्रतिशत की अप्रत्याशित वृद्धि हुयी है।'' ज्ञात हो कि चीन में ऐप्पल के मोबाइल फोन की बिक्री में गत तिमाही में 30 प्रतिशत की गिरावट आयी है। टिम कुक का मानना है कि भारत के नागरिक तीव्र गति से डिजिटल इकोनोमी में प्रवेश कर रहे हैं। भविष्य में बड़ी संख्या में जनता इंटरनेट का उपयोग करेगी।

डिजिटल इकानोमी के प्रभाव को समझने के लिये हमें पीछे जाना होगा। 18वीं सदी में स्टीम इंजन का निर्माण हुआ था। कोयले की खानों से पानी का निकालना तथा गहराई से कोयले की ट्राली को खींचना संभव हो गया था। कोयला निकालने की लागत कम हो गयी। बाजार में कोयला सस्ता हो गया। शीघ्र ही कपड़ा मिलों ने करघों को स्टीम ईंजन से चलाना शुरू कर दिया। कर्मियों द्वारा दस गुना कपड़ा बुना जाने लगा। मैनचेस्टर के पावरलूम पर बना कपड़ा सस्ता पड़ने लगा। इस सस्ते कपड़े का भारत में आयात हुआ। इस सस्ते कपड़े के आगे हमारे जुलाहे पस्त हो गये। तमाम बेरोजगार हो गये। लेकिन दूसरे आविष्कारों ने रोजगार बनाये। बिजली से ट्यूबवेल चलाये गये और सिंचाई का भारी विस्तार हुआ। ट्रैक्टर से अधिक भूमि मे खेती करना संभव हो गया। बेरोजगार मजदूर खेती में खप गये। लेकिन उनकी आर्थिक स्थिति में कोई उछाल नहीं आया। उसके घर में बिजली पहुंची लेकिन वेतन न्यून बने रहे। इस प्रकार स्टीम इंजन के अविष्कार ने भारत में तमाम जुलाहों को संकट में डाला फिर उस संकट से उठाकर पूर्ववत् गरीबी के स्तर पर पुर्नस्थापित कर दिया।

विश्व बैंक ने वर्ल्ड डेवलपमेंट रपट 2016 में कहा है कि डिजिटल इकानोमी से गरीब की तुलना में अमीर को अधिक लाभ हुआ है। विकसित देशों के संगठन आर्गेनाइजेशन फार इकानामिक कुआपरेशन एण्ड डेवलपमेंट के अनुसार श्रम बाजार में मध्यम स्तर के रोजगार समाप्त हो रहे हैं।

— डॉ. भरत झुनझुनवाला

डिजिटल इकानोमी का भी लगभग ऐसा ही प्रभाव दिख रहा है। जिस प्रकार स्टीम इंजन ने लोगों को रोजगार छीन लिया उसी प्रकार फोटो कापी मशीन ने टाइपिस्टों का,

ओला ने टैक्सी स्टैंडों का, कम्प्यूटर ने सांख्यिकी गणित करने का, और ईमेल ने डाकिये का रोजगार ने हड़प लिया है। जिस प्रकार ट्यूबवेल और ट्रैक्टर ने खेत मजदूरों के नये रोजगार बनाये थे, उसी प्रकार फोटोकापी, काल सेंटर, मोबाईल डाउनलोड आदि में नये रोजगारों का सृजन हो रहा है। जिस प्रकार खेत मजदूर के घर बल्ब जलने का चमत्कार हुआ था उसी प्रकार आज श्रमिक के घर में फ्रिज, टीवी और मोबाइल पहुंच गया है। लेकिन जिस प्रकार खेत मजदूर की आय जुलाहे की आय की तरह न्यून बनी रही उसी प्रकार मोबाइल हाथ में लिये हुये श्रमिक की आय न्यून बनी हुयी है। दूसरी तरफ बड़ी कंपनियों के लाभों में लगातार इजाफा हो रहा है। टैक्सी स्टैंड का धंधा चौपट है पर ओला मालामाल है।

समस्या वैश्विक है। अमरीकी सरकार की संस्था यूएस एजेंसी फार इंटरनेशनल डेवलपमेंट के 2014 के अध्ययन के अनुसार डिजिटल इकानोमी से वैश्विक आय में वृद्धि हुयी है परंतु अमरीकी श्रमिकों की औसत आय में गिरावट आयी है। विश्व बैंक ने वर्ल्ड डेवलपमेंट रपट 2016 में कहा है कि डिजिटल इकानोमी से गरीब की तुलना में अमीर को अधिक लाभ हुआ है। विकसित देशों के संगठन आर्गेनाइजेशन फार इकानामिक कुआपरेशन एण्ड डेवलपमेंट के अनुसार श्रम बाजार में मध्यम स्तर के रोजगार समाप्त हो रहे हैं। एक तरफ ऊंचे वेतन देने वाले मुट्ठी भर उच्च स्किल के रोजगार हैं तो दूसरी तरफ न्यून वेतन देने वाले रोजगार हैं। श्रम की आय न्यून बनी हुयी है। फेक्ट्रियों में आटोमेटिक मशीनों के उपयोग से श्रम की मांग में गिरावट आ रही है। ऐसी ही स्थिति अपने देश में बनी हुयी है। एक स्वतंत्र एनजीओ द्वारा किये गये अध्ययन में कहा गया है कि वर्ष 2011 में देश में 9 लाख रोजगार उत्पन्न हुये थे। इसके बाद रोजगार सृजन की गति निरंतर गिर रही है। वर्ष 2015 में मात्र 135,000 रोजगार उत्पन्न हुये हैं।

रोजगार के इस हनन में डिजिटल इकानोमी का महत्वपूर्ण योगदान है। सामान्य श्रमिक की दिहाड़ी अपने स्थान पर टिकी हुयी है। उसके जीवन स्तर में सुधार मुख्यतः माल के सस्ते हो जाने से हुआ है जैसे 800 रु. में सस्ते मोबाइल उसे उपलब्ध हो गये हैं। लेकिन भूखे पेट उसके लिये मोबाइल किस काम का?

कुछ विद्वानों का मानना है कि जनता को डिजिटल स्किल्स दिला दें तो वे डिजिटल इकोनोमी में उन्नत रोजगार प्राप्त कर सकेंगे और उनकी आय में वृद्धि होगी। इस संभावना पर बीता समय प्रकाश डालता है। बीती दो सदियों में अपने देश में शिक्षा का भारी विस्तार हुआ है। लेकिन शिक्षित बेरोजगारों का बाहुल्य हो गया है क्योंकि एक कर्मी द्वारा बनाया गया साफ्टवेयर 100 टेलीफोन आपरेटरों का रोजगार छीन लेता है। अतः डिजिटल स्किल से व्यक्ति विशेष को अवश्य लाभ होगा परंतु सामान्य श्रमिक के लिये यह घाटे का ही सौदा रहेगा।

वर्ष 2011 में देश में 9 लाख रोजगार उत्पन्न हुये थे। इसके बाद रोजगार सृजन की गति निरंतर गिर रही है। वर्ष 2015 में मात्र 135,000 रोजगार उत्पन्न हुये हैं।

एक नई प्रकार की अर्थव्यवस्था बन रही है। मुट्ठीभर श्रमिक रोबोटों तथा कम्प्यूटरों के द्वारा कारखाने संचालित करेंगे। चीन में एक कारखाना लगा है जिसमें उत्पादन का पूरा काम रोबोट द्वारा किया जाता है। मशीन संचालन के लिये एक भी व्यक्ति की आवश्यकता नहीं होती है। कारखाने में चन्द इंजिनियर ही कार्यरत हैं जो रोबोट की देखभाल करते हैं। ऐसी कंपनियों द्वारा पूरी जनता की जरूरतों के कपड़े, जूते, किताबों एवं मोबाइल फोन इत्यादि का उत्पादन कर दिया जायेगा। आम आदमी के रोजगार सिकुड़ेंगे जैसा कि अपने देश तथा विकसित देशों की तमाम रपटें बता रही हैं। एक तरफ अमीरी का जोर है तो दूसरी ओर बेरोजगारी और मायूसी। यह मायूसी इस समय कम दिख रही है क्योंकि बेरोजगार भी मोबाइल पर गेम खेलकर मस्त हैं। बहरहाल यह परिस्थिति टिकाऊ नहीं है। बेरोजगारी का त्रास शीघ्र ही सामने आयेगा।

इस दुरूह स्थिति को स्वर्णिम दुनिया में बदला जा सकता है। उत्पादन के लिये श्रम की जरूरत कम होती जा रही है। अब तक की मान्यता थी कि व्यक्ति को जीविका के लिये श्रम करना जरूरी है। परंतु जब अर्थव्यवस्था को श्रम की जरूरत ही नहीं है तो श्रमिक श्रम कहां करेगा? अतः जीविका को श्रम से अलग करना पड़ेगा। कार्ल मार्क्स ने सोचा था कि सोशलिस्ट इकानोमी में श्रम की जरूरत नहीं रह जायेगी। लोग अपने पसंद का कार्य करेंगे। ऐसी परिस्थिति बन रही है। जरूरत है कि देश के हर नागरिक को जीविका के लिये पर्याप्त आय बिना श्रम के उपलब्ध करा दी जाये। उसकी जीविका की गारंटी हो। इसके बाद उसकी इच्छा है कि वह पार्क में चिड़िया का संगीत सुनेगा अथवा मोबाइल में गेम्स खेलेगा। यदि जीविका को श्रम से जोड़े रखा गया तो श्रम के अभाव में जीविका संकट में आयेगी और विस्फोट होगा। ❑❑

जंगलों के अभाव में कैसे जिएंगे हम

आज समूची दुनिया में जंगल जिस तेजी से खत्म हो रहे हैं, उससे ऐसा लगता है कि वह दिन अब दूर नहीं जब जंगलों के न रहने की स्थिति में धरती पर पाई जाने वाली वह बहुमूल्य जैव संपदा बहुत बड़ी तादाद में नष्ट हो जाएगी जिसकी भरपाई फिर कभी नहीं हो पाएगी। करंट बायोलॉजी नामक एक शोध पत्रिका में प्रकाशित एक ताजे अध्ययन से यह खुलासा हुआ है कि दुनिया में यदि जंगलों के खात्मे की यही गति जारी रही तो 2100 तक समूची दुनिया से जंगलों का पूरी तरह सफाया हो जाएगा। आज भले हम यह दावा करें कि अभी भी दुनिया में कुल मिलाकर 301 लाख वर्ग किलोमीटर जंगल बचा है जो पूरी दुनिया की धरती का 23 फीसदी हिस्सा है।

दुनिया के वैज्ञानिकों की जंगलों की तेजी से बेतहाशा खत्म होती रफ्तार को देखते हुए सर्वसम्मत राय है कि अब वह समय आ चुका है जब यह धरती अपने जीवन में छठवीं बार बहुत बड़े पैमाने पर जैव संपदा के पूरी तरह खात्मे के कगार पर पहुंच चुकी है। उनके अनुसार इस बार केवल अंतर यह है कि इससे पहले जब–जब युग परिवर्तन हुआ, उस समय हमेशा ही इसके कारण प्राकृतिक ही रहे थे, लेकिन इस बार स्थिति पूरी तरह भिन्न है क्योंकि बदले हालात में वर्तमान में इसका जो सबसे बड़ा और अहम कारण है, वह मानव निर्मित है।

इसमें दो राय नहीं कि सभ्यता के विस्तार के प्रारम्भिक काल में मानव ने ही जंगलों को काटा, अपने आवास की खातिर बस्तियों का निर्माण किया और खेती करना शुरू किया। यह क्रम अब भी थमा नहीं है। लेकिन जंगलों के लगातार काटे जाने का सिलसिला जारी रहने और उसमें विकास की खातिर हो रही बेतहाशा बढ़ोत्तरी के चलते अब यह लगने लगा है कि यदि यह इसी भांति जारी रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हमारी सभ्यता ही न खतरे में पड़ जाये।

कानून बनने के बाद से अब तक पूरे देश में 20871 बांधों, सिंचाई, उद्योगों, रेल, सड़क निर्माण आदि के लिये बनी परियोजनाओं हेतु कुल मिलाकर 11.02 लाख हेक्टेयर से अधिक वन क्षेत्र विकास की समिधा बने, जबकि इसके तीन गुणा वनीकरण के स्थान पर कुल 4.22 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में ही वनीकरण हुआ।

– ज्ञानेन्द्र रावत

वैज्ञानिक इसकी चेतावनी काफी पहले ही दे चुके हैं। उनके अनुसार समूची दुनिया के जंगल बड़ी तेजी से खत्म हो रहे हैं। दुनिया के जंगलों का दसवां हिस्सा तो पिछले बीस सालों में ही खत्म हो चुका है, जो तकरीब 9.6 फीसदी के आस–पास है। असलियत यह है कि जंगलों के खात्मे का सिलसिला विकास के रथ पर सवार सरकारों की नीतियों के क्रियान्वयन की खातिर नित नई–नई बस्तियों के निर्माण, औद्यौगिक प्रतिष्ठानों की स्थापना, जलविद्युत परियोजनाओं, रेल की पटरियों व हाईवे निर्माण और खनन के नाम पर बेरोकटोक जारी है।

इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि हर साल दुनिया में हजारों–लाखों हेक्टेयर जंगल आग की भेंट चढ़ जाते हैं। वह चाहे यूरोप हो, उत्तरी या दक्षिणी अमरीका हो या अफ्रीका हो, एशिया हो या ऑस्ट्रेलिया, जहां कोई साल ही ऐसा जाता हो जब वहां जंगलों में आग न लगती हों। यही नहीं इस आग को बुझाने में वायु सेना तक की मदद ली जाती है। नतीजन इस आग में बहुत बड़ी तादाद में बेशकीमती जैव संपदा नष्ट हो जाती है। यह एक कटु सच्चाई है।

हमारे यहां भी जंगलों में आग लगने और जैव संपदा के खात्मे का सिलसिला बदस्तूर जारी है। दरअसल जहां–जहां चीड़ के जंगल हैं, उनका ज्वलनशील पिरूल जंगलों की

(शेष पृष्ठ 26 पर ...)

आराम की थैली में बिमारियों का खतरा

'प्लास्टिक बैग्स' विक्रेताओं और उपभोक्ताओं दोनों के बीच बहुत लोकप्रिय हैं क्योंकि ये सस्ती, मजबूत और हल्की होती हैं। हालांकि आधुनिक समय में इन्हें इतना सुविधाजनक माना जाता है कि इनके बिना रहना असंभव लगता है, परंतु ये प्रदूषण, वन्य जीवन को खत्म करने और पृथ्वी के कीमती संसाधनों का उपयोग करने के लिए ज़िम्मेदार हैं। प्लास्टिक से बनी वस्तुओं का जमीन या जल में इकट्ठा होना प्लास्टिक प्रदूषण कहलाता है। जिसका वन्य जन्तुओं, या मानवों के जीवन पर बुरा प्रभाव पडता है।

पूरे विश्व में भारत में प्लास्टिक का उपयोग सबसे अधिक किया जाता है। प्लास्टिक के प्रदूषण के कारण तथा हमारे प्लास्टिक बैग के अनावश्यक उपयोग करने के कारण हमारा ग्रह संक्रमित हो रहा है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड़ के सर्वे के अनुसार रोज किसी भी महानगर में 65 से 70 टन प्लास्टिक का कचरा निकलता है। इसमें से 20 टन मोटे प्लास्टिक के रूप में आता है, जबकि शेष 45 से 50 टन प्लास्टिक की थैलियां, पन्नियां और बोतल का होता है।

प्लास्टिक मूल रूप से विषैला या हानिप्रद नहीं होता, परंतु प्लास्टिक के थैले रंग और रंजक, धातुओं और अन्य प्रकार के अकार्बनिक रसायनों को मिलाकर बनाये जाते है। रंग और रंजक एक प्रकार के औद्योगिक उत्पाद होते है, जिनका उपयोग प्लास्टिक थैलों को चमकीला रंग देने के लिया किया जाता है। इनमें से कुछ कैंसर को जन्म देने की संभावना से युक्त होते है तो कुछ खाद्य पदार्थों को विषैला बनाने में सक्षम होते है। रंजक पदार्थों में कैडमियम जैसी जो धातुएं भारी होती है वे फैलकर स्वास्थ्य के लिए खतरा साबित हो सकती है।

चाहे गली या चौराहे के बाहर खड़े सब्जी वाले या फल वाले से कुछ भी खरीदना हो या फिर एयरकंडीशनर मॉल से शॉपिंग, जब भी हम अपने घर के बाहर कुछ खरीदने के लिए जाते है तो ढेर सारी पॉलीथिन के साथ लौटते है। एक शोध के अनुसार इनमें से 25 प्रतिशत पॉलीथिन दोबारा उपयोग हो पाती है, जबकि 75 प्रतिशत पालीथिन कचरे में जाती है और पर्यावरण को प्रदूषित करती है।

लोग केवल प्लास्टिक बैग्स से होने वाले नुकसान तक ही सीमित रहते है, जबकि हमें अपने पर्यावरण को पूर्णतः प्लास्टिक मुक्त बनाने की आवश्यकता है। डिस्पोजेबल कप,

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड़ के सर्वे के अनुसार रोज किसी भी महानगर में 65 से 70 टन प्लास्टिक का कचरा निकलता है। इसमें से 20 टन मोटे प्लास्टिक के रूप में आता है, जबकि शेष 45 से 50 टन प्लास्टिक की थैलियां, पन्नियां और बोतल का होता है।

– रेणु पुराणिक

चम्मच, प्लैटस एवं प्लास्टिक के अन्य सामान भी पर्यावरण के लिए घातक है। हमें प्लास्टिक मुक्त जीवन की ओर आगे बढना चाहिए और ये केवल जागरूकता से ही संभव है।

इंडियन प्लास्टिक बैक फोरम के अध्यक्ष श्री सुनील त्रिवेदी के अनुसार सभी प्रकार का प्लास्टिक हानिकारक नहीं होता है। खाद्य पदार्थों को रखने के लिए फूड ग्रेड प्लास्टिक का उपयोना करना सुरक्षित होता है। परंतु पॉलीथिन इस श्रेणी में नहीं आती है। अतएवं खाद्य पदार्थों को पॉलीथिन में नहीं रखना चाहिए।

हाल ही में पर्यावरण मंत्रालय ने प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट एंड डिस्पोजल रूल्स 2016 लागू किया है। जिसके अनुसार सभी प्लास्टिक निर्माता, उपयोगकर्ता और रिसाइकल करने वालों को प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड में स्वयं रजिस्ट्रेशन करना होगा। अगले पांच वर्षों में 80 प्रतिशत प्लास्टिक रिसाइकल करने की जिम्मेदारी भी उन्हीं की होगी।

प्लास्टिक से जुड़े तथ्य

- प्लास्टिक 700 वर्षों में नष्ट होना आरंभ होता है और इसको पूरी तरह से नष्ट होने में 1000 वर्ष तक लग जाते हैं।
- 5 खरब प्लास्टिक बैग हर वर्ष बनाये जाते है। इनसे पूरी पृथ्वी को 7 बार लपेटा जा सकता है।
- पूरी दुनिया में प्रति सेकेंड 1,60,000 प्लास्टिक बैग का उपयोग किया जाता है।
- प्लास्टिक कभी भी पूरी तरह नष्ट होकर प्रकृति में नहीं मिलता है। इसके छोटे–छोटे अणु पर्यावरण प्रदूषित करते है।
- सुपर मार्केट में सन् 1977 से प्लास्टिक बैगस का उपयोग आरंभ हुआ।
- एक औसत परिवार चार बार सुपर मार्केट जाने पर 60 पॉलीथ्विन का उपयोग कर लेता है।
- पूरी दुनिया में केवल 1 से 3 प्रशित की प्लास्टिक बैग रिसाइकल किये जाते है।

पर्यावरण रक्षा

1. इको फ्रेंडली बैग्स का उपयोग करे। खरीदारी करने के लिए जाते समय कपड़े का थैला ले जाये।
2. जिन दुकानों पर पॉलीथिन नहीं मिल रही है, उन्हें सहयोग करे और जहां मिल रही है, वहां स्वयं की पॉलीथिन लेने से मना कर दे।
3. पॉलीथिन का दोबारा उपयोग करे और रिसाइकल करे।
4. अपने आस–पास के लोगों को विशेषकर बच्चों को प्लास्टिक के दुष्प्रभाव बताएं। ❑❑

(पृष्ठ 24 से जारी ...)

जंगलों के अभाव में कैसे जिएंगे...

बर्बादी का एक प्रमुख कारण है। यह आग को प्रचंड रूप देने का काम करता है। जंगलों के अन्य प्रजाति के पेड़–पौधों के लिये भी यह नुकसानदायक है। यह जैवविविधता के लिये भी खतरा है।

चीड़ के एक हेक्टेयर जंगल से लगभग 8 टन पिरूल गिरता है। इसका कोई खास उपयोग भी नहीं होता और जमीन पर गिरने से इसकी परत–दर–परत बनती हैं जिससे इसके नीचे कुछ पैदा नहीं होता है। कोई साल ऐसा नहीं जाता जब देश में हजारों हेक्टेयर जंगल आग की भेंट न चढ़ते हों। इस पर आज तक अंकुश लगाने में दुनिया में कोई भी सरकार कामयाब नहीं हो सकी है।

हमारे देश में हर साल तकरीब 28 हजार हेक्टेयर से ज्यादा वन क्षेत्र घट रहा है। 1980 में कानून बनने के बाद भी वन अधिकारियों, वन माफिया, ठेकेदारों और वन रक्षकों की मिली–भगत के चलते जंगलों के अन्धाधुन्ध अवैध कटान पर अंकुश लगाने में सरकार पूरी तरह नाकाम रही। वन क्षेत्र का दिनों–दिन घटता जाना इसका जीता–जागता सबूत है।

वनों के कटान से संबंधित नियम यह है कि यदि विकास कार्यों के लिये जितने पेड़ काटे जाते हैं उससे तीन गुना ज्यादा पेड़ लगाने होंगे। यह जरूरी है लेकिन इसका पालन करने में सरकार के अधिकारी–कर्मचारी कितने चाक–चौबंद हैं, यह वन एवं पर्यावरण मंत्रालय के आंकड़ों से जाहिर हो जाता है कि बीते 30–35 सालों में कुल कटे पेड़ों के तीन गुने तो दूर, वे अब तक उसके एक तिहाई पेड़ ही लगा पाये हैं।

कानून बनने के बाद से अब तक पूरे देश में 20871 बांधों, सिंचाई, उद्योगों, रेल, सड़क निर्माण आदि के लिये बनी परियोजनाओं हेतु कुल मिलाकर 11.02 लाख हेक्टेयर से अधिक वन क्षेत्र विकास की समिधा बने जबकि इसके तीन गुणा वनीकरण के स्थान पर कुल 4. 22 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में ही वनीकरण हुआ। सरकारी आँकड़ों को मानें तो देश के कुल भूभाग के 21.02 फीसदी हिस्से पर जंगल हैं और यदि 2.82 फीसदी ट्री कवर को जोड़ दे तो यह 23.84 फीसदी होता है। आज यही हमारी वन संपदा है।

यह हालत स्थिति की भयावहता की ओर इशारा करती है। वैसे बीते सालों में पर्यावरण को लेकर समूची दुनिया में जागरुकता आई है और जंगलों का मानव जीवन में महत्त्व भी कुछ हद तक समझ में आया है लेकिन बढ़ती आबादी की जरूरतें पूरी करने के विकल्पों का आज भी पूरी तरह अभाव है। ऐसी स्थिति में जंगल कटते ही रहेंगे। समझ नहीं आता कि लोग यह क्यों नहीं सोचते कि जब जंगल ही नहीं रहेंगे तो हम जिन्दा कैसे रहेंगे। ❑❑

साभारः http://hindi.indiawaterportal.org/Forest-in-India

आहार विधि–विधान

'आहार एव औषधम्' के अनुसार अगर आहार को ही हम औषध के रूप में प्रयोग करे तो हमारे स्वास्थ्य संरक्षण रूपी उद्धेश्य की पूर्ति अवश्यमेव हो सकती है। जिस तरह औषध को मात्रावत् एवं समयानुसार ग्रहण करना होता है उसी तरह भोजन को अपनी पाचकाग्नि के अनुसार मात्रावत् एवं समयानुसार ग्रहण करना चाहिये। जैसे दूध जन्म से ही सामान्यतया सभी मनुष्यों को सात्म्य होता है, उसी तरह स्वभाव से ही हिततम आहार करने वाले सभी व्यक्तियों एवं कुछ रोगियों के लिए आहार का अग्रलिखित विधि–विधान अनुकूल होता है।

उष्णं अश्नीयात्– अर्थात् गरमागरम भोजन ही सेवन करना चाहिये। इससे पाचक अग्नि तेज होती है, भोजन जल्दी पच जाता है, कफ का शोषण एवं शरीरगत वायु का नियमन होता है तथा भोजन स्वादिष्ट लगता है। इससे हम यह निर्णय ले सकते हैं कि अगर किसी व्यक्ति को देर से भोजन पचने की शिकायत है, उदर में भारीपन की अनुभूति होती है, वायु पूर्ण उद्गार आती है तथा प्रातःकाल में थोड़े समय के लिए ज़ुख़ाम, खांसी जैसी शिकायत होती है तो उसे उष्ण भोजन ही करना चाहिए।

जिस तरह औषध को मात्रवत् एवं समयानुसार ग्रहण करना होता है उसी तरह भोजन को अपनी पाचकाग्नि के अनुसार मात्रावत् एवं समयानुसार ग्रहण करना चाहिये। जैसे दूध जन्म से ही सामान्यतया सभी मनुष्यों को सात्म्य होता है, उसी तरह स्वभाव से ही हिततम आहार करने वाले सभी व्यक्तियों एवं कुछ रोगियों के लिए आहार का विधि–विधान अनुकूल होता है।

– वैद्या हेतल दवे

स्निग्धं अश्नीयात्– अर्थात् सर्वदा स्निग्ध भोजन करना चाहिए। इससे भोजन स्वादिष्ट लगता है, पाचकाग्नि प्रदीप्त होती है, वायु का अनुलोमन, शरीर का उपचय, इन्द्रियों की दृढ़ता, शारीरिक बल की वृद्धि तथा वर्ण में स्वच्छता आती है। वर्तमान समय में टेलिवीजन, कम्प्यूटर एवं विडियो गेम के बढ़ते प्रयोग से बच्चे एवं व्यस्क व्यक्तियों को आंखें कमजोर होने की शिकायत रहती है। इससे अपने आप को सुरक्षित रखने के लिए स्निग्ध भोजन लाभदायी रहता है। अगर किसी व्यक्ति की स्मरण शक्ति कमज़ोर है तब भी इस प्रकार के भोजन को प्राधान्य देना चाहिए।

मात्रावत् अश्नीयात्– अर्थात् भोजन मात्रापूर्वक करना चाहिये। इससे शारीरिक दोष

पीड़ित नहीं होते, आयु बढ़ती है, भोजन का सरलता से पाचन हो जाता है। बल, वर्ण, ओज अपनी यथावत् स्थिति में रहते हैं, आरोग्य की प्राप्ति होती है एवं इन्द्रियों की निर्मलता बनी रहती हैं। **महाभारत** के **उद्योगपर्व** में कहा गया है कि मिताहार आहार से (मिताहार अर्थात् अपनी क्षुधा से थोडा कम खाने से) छः गुण प्राप्त होते हैं यथा आरोग्य, आयु, बल और सुख तो मिलते ही है, संतान सुंदर होती है तथा 'यह बहुत खाता है' ऐसा कहकर लोग उस पर आक्षेप नहीं करते।

यदि व्यक्ति उपयुक्त मात्रा से अल्प अथवा अत्यधिक भोजन करता है तब शरीर में विकार उत्पन्न होते हैं। **अति न्यून मात्रा** में भोजन करने पर बल, वर्ण, उपचय, मन, बुद्धि व इन्द्रिय शक्ति कम होती है। इससे कब्ज उत्पन्न होती है, आयु ओज, सार एवं शरीर की शोभा को पुष्ट नहीं करता और अनेक वायु के विकारों को उत्पन्न करता है। **अधिक भोजन** शरीर में सभी दोषों को प्रकुपित करने वाला बताया गया है। इससे शारीरिक–मानसिक चपलता में कमी व मानसिक जड़ता उत्पन्न होकर मन की कल्पनाशक्ति में कमी आ जाती है। शारीरिक विकृति जैसे– स्थूलता उत्पन्न हो जाती है।

ऐसा ही एक प्रसिद्ध लोकोक्ति में कहा गया है कि **''अति सर्वत्र वर्जयेत्''।** अगर विष को मात्रावत् ग्रहण किया जाय तो वह अमृत बन जाता है और अमृत को अतिमात्रा में लेने से विष समान बन जाता है। एक कथानक के अनुसार एक बार ईरान के बादशाह ने अपने यहां के एक श्रेष्ठ वैद्य से प्रश्न किया कि दिन–रात में आदमी को कितना खाना खाना चाहिए? उत्तर मिला – छः दिरम अथार्त् 390 ग्राम। फिर राजा ने पूछा इतने से क्या होगा? वैद्य ने कहा शरीर के पोषण के लिए इससे अधिक नहीं खाना चाहिए। इसके उपरान्त जो कुछ खाया जाता है वह **केवल बोझ ढोना और उम्र खोना** है।

आहार सद्यःबलकृत्, प्रीणन, देह को धारण करनेवाला, उत्साहकर, आयुष्कर, स्मृतिकर, अग्निवर्धक है। आहार के इन अमृत तुल्यगुणों से अगर लाभान्वित होना है तो मात्रावत् आहार लेना चाहिये, क्योंकि यही शरीर की उत्पत्ति, स्थिति व विनाश के लिए कारणभूत है। महर्षि सुश्रुत ने कहा है कि होने वाली 100 मृत्यु में से 99 अकाल मृत्यु होती है।

आहार की सम्यक् मात्रा के लक्षण (Parameter of Appropriate Diet)

- भोजन ग्रहण करने के बाद व्यक्ति को आहार के द्वारा पेट में दबाव की अनुभुति न हो।
- श्वासोच्छवास की प्रक्रिया सरलता से हो।
- पार्श्व में फटने जैसी पीडा न हो।
- पेट में अधिक भारीपन न हो।
- भोजन से इन्द्रियां तृप्त हो जाए।
- भूख–प्यास की शांति हो जाए।
- भोजन ग्रहण करने के बाद बैठने, शयन करने, हलन चलन करने, हंसने और बातचीत करने में किसी भी प्रकार के कष्ट का अनुभव नहीं होना चाहिए।

अतः केवल घड़ी की सूई को देखकर भोजन का समय हो गया है ऐसा मानकर ही अपना आहार ग्रहण न करें अपितु अपनी क्षुधाशक्ति के अनुसार आहार के प्रकार व आहारमात्रा का निर्धारण करें जिससे हम असंख्य रोगों से बच सकते हैं। **आचार्य भावमिश्र** ने भी क्षुधा की प्रतीति को ही उचित अन्नग्रहण काल बताया है। वैसे **लोकव्यवहार** में भी दो बार भोजन लेने की परंपरा प्रचलित है। **योगरत्नाकर** में भी कहा गया कि जैसे अग्निहोत्र दो बार किया जाता है वैसे ही भोजन भी दो बार करें। जिसको अन्य **स्मृतिकारों** ने भी स्वीकृति दी है। **मनुस्मृतिकार** ने बताया है कि दिन में दो बार भोजन करें तथा सुबह का भोजन न पचने पर सायंकालीन भोजन न करें।

अगर विष को मात्रावत् ग्रहण किया जाय तो वह अमृत बन जाता है और अमृत को अतिमात्रा में लेने से विष समान बन जाता है।

जीर्णे भुंजीत– अर्थात् एक समय किया हुआ भोजन पच जाए तब ही दूसरे समय का भोजन ग्रहण करना चाहिए। ऐसा न करने से प्रथम बार किया हुआ भोजन, जो अभी पाचन क्रिया में है, उसके साथ दूसरा अन्न मिलकर सभी दोषों को शीघ्र प्रकुपित करता है। यही बात व्यक्ति को अपने आहार की मात्रा के निर्धारण करने में निश्चित रूप से संकेत देती हैं कि व्यक्ति इतनी मात्रा में ही भोजन करे जो दूसरे अन्नकाल तक सुखपूर्वक पच जाए अर्थात् सायंकाल में किया गया भोजन प्रातःकाल व प्रातःकाल में किया गया भोजन सायंकाल तक सुखपूर्वक पच जाए। किसी जानवर को नजदीक से देखने से ज्ञात होता है कि जब कभी उसको प्रातः का भोजन नहीं पचता, तो वह दूसरे काल का भोजन ग्रहण नही करता। भोजन पचने के बाद आहार ग्रहण करने की इच्छा होने पर ग्रहण किया हुआ भोजन आयु को संपूर्णरूप में बढ़ाता है।

अग्रवर्णित लक्षण प्रथम किए हुए भोजन का पूर्ण पाचन प्रदर्शित करते हैं (Sign & Symptoms of Digested Food) –

- मल–मूत्र का विसर्जन यथोचित समय पर हो जाये।
- उदर तथा शरीरगत इन्द्रियों जिह्वा,

नासा, कर्ण आदि में लघुता की अनुभूति हो।

– उद्गार शुद्धि हो अर्थात् अम्ल या मधुर उद्गार नहीं आने चाहिये।

वीर्याविरुद्धम् भुंजीत– अर्थात् ऐसा भोजन कभी नहीं करना चाहिए जो परस्पर वीर्य विरुद्ध अर्थात् तासीर से विरुद्ध हो जैसे नमक एवं दुग्ध, खट्टे फल के साथ दुग्ध आदि। ऐसा भोजन स्त्रोतों को बंद कर अनेक प्रकार की व्याधियों को उत्पन्न करता हैं। जनसामान्य से हमें कई बार सुनने को मिलता है कि मैं तो इतने समय से वीर्यविरुद्ध भोजन का सेवन कर रहा हूं और आपके सामने हूं, कुछ नहीं हुआ। किंतु किसी व्यक्ति को एक बार ही धक्का लगने से, जरुरी नहीं है कि वह गिर जाए। किंतु बार–बार लगने वाले धक्के से वह एक दिन जरूर गिर सकता है और ऐसा भी गिर सकता है कि फिर संभल ही न पाये। क्योंकि यह व्यक्ति की रोगप्रतिकारक शक्ति पर निर्भर करता है। इसलिए मनुष्य को शरीर के लिए हितकारी अर्थात् पथ्य का प्रयोग करना चाहिये। सफल चिकित्सा का भी यही मूल मंत्र है यथा–

पथ्य सति गदार्तस्य किमौषधनिषेवणैः।
पथ्येऽसति गदार्तस्य किमौषधनिषेवणैः।।

अर्थात् अगर रोगी पथ्यपालन करें तो औषध सेवन का लाभ नहीं है और यदि पथ्यपालन न करें तो भी औषध सेवन का लाभ नहीं है। बिना औषध सेवन किए, मात्र पथ्यपालन से भी रोगनिवृत्ति हो जाती है इसलिए औषध आवश्यक नहीं। पथ्यपालन के बिना औषध सेवन करने पर भी रोग की स्थिति यथावत् बनी रहती है इसलिए भी औषध आवश्यक नहीं है। आचार्य **हारीत** ने कहा है कि अपथ्य सेवन से रोग अतिघोर हो जाता है।

इष्ट देशे, इष्ट सर्वोपकरणं भुंजीत– अनुकूल स्थान पर एवं मन के अनुकूल सभी साधन–सामग्रियों के साथ

बिना औषध सेवन किए, मात्र पथ्यपालन से भी रोगनिवृत्ति हो जाती है इसलिए औषध आवश्यक नहीं।

भोजन करना चाहिए क्योंकि सम्यक् पाचन के लिए मन का प्रसन्न रहना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आचार्य चरक ने कहा है कि– चिंता, शोक, भय, क्रोध, कष्टकारी शय्या, रात्री जागरण के कारण मात्रापूर्वक खाए हुए पथ्य अन्न का भी ठीक पाचन नहीं होता।

नातिद्रुतं भुजीत– अर्थात् बहुत जल्दी भोजन नहीं करना चाहिए ऐसा करने वाले व्यक्ति का आहार विपरीतगामी होकर श्वासनली में जा सकता है।

नातिविलम्बितं भुंजीत– भोजन करते समय अधिक समय नहीं लगाना चाहिए। ऐसा करने से भोजन में संतोष नहीं होता, मात्रा से अधिक भोजन ग्रहण हो जाता है, आहार शीतल हो जाता है जिससे पूर्व में बताये गये उष्ण आहार के गुणों से वंचित हो जाते हैं एवं आहार का सम्यक् रुप से पाचन भी नहीं होता।

अजल्पन्, अहसन्, तन्मना भुंजीत– अर्थात् भोजन वार्तालाप करते हुए और हंसते हुए न करें अपितु मन लगाकर करना चाहिए। ऐसा करने से आहार विपरीतागामी हो सकता है तथा आहार का सम्यकपाचन नहीं होता।

आत्मानमभिसमीक्ष्य सम्यक् भुंजीत– स्वयं के अंतर्मन के अनुसार आहार लेना चाहिए। यह आहार मेरे लिए लाभदायी है या नहीं? इसकी अच्छी तरह समीक्षा करके ही ग्रहण करना चाहिए। अमुक भोजन व्यवहार में अधिकांश रूप से प्रचलित होने से अधिकतम व्यक्तियों द्वारा सेवन किया जाता है मात्र इस विचार से प्रेरित होकर जिह्वालौल्य से प्रेरित होकर भोजन करने से वह हानिकर हो सकता है। जैसे कहा गया है कि अपनी उन्नति चाहने वाले पुरुष को वही वस्तु खानी चाहिये, जो खाने योग्य हो तथा खायी जा सके, खाने पर पच सके और पच जाने पर हितकारी हो तथा सज्जन पुरुष पच जाने पर अन्न की प्रशंसा करते हैं। जितेन्द्रिय मनुष्य हितकारी भोजन करता रहता है वह रोग रहित रहता हुआ छत्तीस हजार रात्रियों तक अर्थात सौ वर्ष तक जीवित रहता है।

भोजन में षाड़रस सेवन क्रम– रसास्वादन के छः प्रकार बताये गए हैं यथा मीठा, खट्टा, नमकीन, तीखा, कड़वा व कषैला। इन सभी रसों का सममात्रा में सेवन करने से वह बलदायक होता है। षाड़रस आहार सेवन करने से शरीर की रोगप्रतिकारक शक्ति यथावत् बनी रहती है तथा ऐसा न करने से शरीर में दुर्बलता उत्पन्न होती है। प्रायः कडवे तथा कषैले रस का उपयोग व्यवहार में अल्पमात्रा में होता है अतः प्रयासपूर्वक इनको जीवन में प्राधान्य देना चाहिए। कडवा रस आमाशय तथा पाचन संस्थान के लिए हितकारी बताया गया है। जिस व्यक्ति की क्षुधादीप्त है, उसे वातपित्त दोषों के प्रशमन के लिए प्रथमतः मधुर रस का सेवन करना चाहिए, पाचक अग्नि को दीप्त रखने के लिए भोजन के मध्य में लवण व अम्ल रस का सेवन करना चाहिए तथा अन्त में कफ को शान्त करने के लिए तीखे रस का सेवन करना चाहिए।

भोजन ग्रहण करने के कुछ अन्य नियम– आहार (भोजन ग्रहण करना) तथा निर्हार (मल–मूत्र त्याग करना) सदा एकांत स्थान में ही करना चाहिए। इनका पालन करने से लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

भोजन करने के पूर्व भलीभांति शीतल जल से पैरों को धोकर, हस्त तथा मुख

को भी धो लेवें। पैर धोने से पैर का मल व रोग दूर होते हैं। थकान को मिटाता है, नेत्रों के लिए हितकारी, बल प्रदान करता है तथा प्रसन्नता उत्पन्न करता है। सदा गीले पांव करके भोजन करना चाहिए किन्तु गीले पांव शयन नहीं करना चाहिए। गीले पांव भोजन करने वाला व्यक्ति दीर्घायु को प्राप्त करता है।

भोजन करने के पहले अनार आदि फलों का सेवन करना चाहिए। उसके बाद पेय पदार्थ का सेवन करें। पेय के अनन्तर अनेक प्रकार के चित्र–विचित्र भोज्य भक्ष्य पदार्थों का सेवन करें। कमलदण्डी, कमलतन्तु, शालूक, कन्द और इक्षु का प्रयोग सदा भोजन के पूर्व करना चाहिए। भोजन के पश्चात् इनका सेवन उचित नहीं है। भोजन के अंत में कभी–भी दही न खावें। सर्व प्रकार के फलों में आंवला मनुष्यों के लिए बाधा नहीं करने वाला तथा सर्वदोषनाशक होने से भोजन के पूर्व, मध्य और अंत में सेवन करना उत्तम है। जो मनुष्य नमकीन, खट्टे, चरपरे, उष्ण प्रकृति वाले तथा पेट में दाह पैदा करने वाले पदार्थों का सेवन करता हो तो उनसे उत्पन्न होने वाले दोषों के निर्हरणार्थ अंत में मधुर पदार्थ खाकर भोजन की समाप्ति करनी चाहिए। मधुर पदार्थों में भी जो–जो पदार्थ अधिकाधिक मधुर हो उन्हें क्रमशः अंत में सेवन करें।

भोजन करके ताम्बुल खाने के पश्चात् लगभग सौ कदम चंक्रमण (टहलना) करना चाहिए, इससे आयु की वृद्धि होती है। तत् पश्चात् वामपार्श्व (बायीं करवट) के बल लेटकर आराम करना चाहिए। भोजन करने के पश्चात् बैठे रहने से आलस्य आता है, बायीं करवट लेट जाने से शरीर पुष्ट होता है तथा भोजन का उत्तम पाचन होता है। भोजन करते ही परिश्रम करने या दौड़ने से मृत्यु पीछा करती है ऐसा विद्वतजन कहते हैं।

प्रातःकाल का भोजन जीर्ण न होने पर सायःकाल का भोजन करना दोषकर नहीं होता किन्तु सायःकालीन भोजन न पचने पर प्रातःकाल किया गया भोजन अधिक दोषकर होता है। दिन के प्रथम प्रहर में (9 बजे तक) भोजन नहीं करना चाहिए अन्यथा रस का उद्धेग हो जाता है। इसी प्रकार 9 से 12 बजे के बीच में भोजन अवश्य कर लें अन्यथा शरीर के बल का क्षय हो जाता है।

भोजन के साथ जल सेवन विधान– भोजन करते समय कुक्षी के तीन भाग करके, उसमें एक भाग आहार के ठोस पदार्थ, एक भाग जल व एक भाग वायु के संचरणार्थ रखने के लिए बताया गया है। भोजन करते समय अधिक जल पीने से या बिलकुल जल न लेने से आहार का सम्यक् पाचन नहीं होता। अधिक जल ग्रहण करने से पाचक स्त्राव पतले हो जाते हैं। जल को बिलकुल न ग्रहण करने से आहार का क्लेदन व पाचक रस का स्राव समुचित मात्रा में न होने से बदहज़मी हो जाती है इसलिए आवश्यकता अनुसार बीच–बीच में थोड़ा–थोड़ा ग्रहण किया हुआ जल अग्नि को प्रज्जवलित रखता है जो कि स्वस्थता का उचित मापदण्ड है। कहा भी गया है कि **'रोगाः सर्वेऽपि मन्दऽग्नौ'** अर्थात् सभी रोग मन्दाग्नि के परिणामस्वरुप ही उत्पन्न होते हैं। जल अग्नि का विरोधी होने के कारण मन्दाग्नि पुरुष को इसका सेवन कम करना चाहिए।

सदा गीले पांव करके भोजन करना चाहिए किन्तु गीले पांव शयन नहीं करना चाहिए। गीले पांव भोजन करने वाला व्यक्ति दीर्घायु को प्राप्त करता है।

अगर भोजन से पहले जल ग्रहण किया जाए तो वह जल अग्निमांद्य व कृशता लाता है। इसी तरह भोजन के अन्त में यदि उचित मात्रा से अधिक जल लिया जाए तो वह स्थौल्य व कफ विकारों को उत्पन्न करता है इसलिए भोजन के मध्य में जल थोड़ा–थोड़ा लेने से धातुसाम्य को बनाए रखता है व सुखपूर्वक भोजन के पचने में भी सहायता करता है। शरद व ग्रीष्म ऋतु में जल अधिक मात्रा में ग्रहण करना चाहिए।

बर्फ का पानी स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक है। भोजन के साथ अति उष्ण या अतिशीत जल का प्रयोग नहीं करना चाहिए। अति उष्ण व अतिशीत जल से दांतों की जड़ें खराब हो जाती है, दांत जल्दी से गिर जाते हैं। परिणामस्वरुप दांत से होने वाली चर्वण क्रिया बंद हो जाने से विना चबाये हुए आहार को पचाने में दोगुनी शक्ति लगानी पड़ती है, भोजन से तृप्ति नहीं होती तथा उसका स्वाद भी जाता रहता है, क्योंकि पाचन क्रिया मुंह से ही शुरु हो जाती है। 10–15 बार भोज्य पदार्थ को चबाने से शर्करा का पाचन शुरु हो जाता है इसलिए कहा है कि 'Drink food and chew water' अर्थात् आहार को चर्वण क्रिया से इतना महीन करके पीयें तथा पानी को चर्वण क्रिया की तरह आराम से धीरे–धीरे चबाकर पीयें। जल चाहे भोजन के समय लिया जाए अथवा अन्य समय में उसको घूँट–घूँट करके पीना चाहिए। इस तरह जल ग्रहण करने से प्यास अच्छी तरह शांत हो जाती है, आवश्यकतानुसार जलग्रहण होता है, उसमें लार अच्छी तरह मिश्रित हो जाती है जो पाचन क्रिया में सहायक होती है। जिस प्रकार भूख से अधिक खाना हानिकारक है वैसे ही अधिक पानी पीना भी हानिकारक है। जल को जल्दी ग्रहण करने से या मुँह में ऊपर से जल डालने से अवांछित हवा भी जल के साथ पेट में चली जाती है जिसे

'एरोफेजिया' कहते हैं। फलतः आनाह, आध्मान (अफारा) आदि पेट की व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। अगर भोजन से पूर्व जल ग्रहण करना है तो एक घंटा पूर्व करना चाहिए। किन्तु जो मोटेपन का शिकार हैं और अच्छी क्षुधाशक्ति रखते हैं, उन्हें भोजन से तुरन्त पूर्व जल ग्रहण करना चाहिए। भोजन के मध्य में उचित मात्रा में जल ग्रहण करने से वह बल प्रदान करता है तथा भोजन के अन्त में अधिक मात्रा में जल ग्रहण करने से जल विषरूप हो जाता है, यथा– **'भोजन मध्ये बलप्रदं भोजनान्ते विषं वारि'।**

अपक्व अन्नरस– अपनी पाचन शक्ति के अनुरूप भोजन न करने के परिणामस्वरूप भोजन न पचने से निर्मित पदार्थ ही अपक्व अन्नरस है। जब इस आम अर्थात् अपक्व अन्नरस के शरीर में उत्पन्न होने से उत्पन्न शरीरगत लक्षण आपको सूचित करते हैं, तब उसको पहचान कर जागृत एवं सचेत रहने की जरूरत है क्योंकि इस आमोत्पत्ति की अवस्था को आयुर्वेद में **'हेतु सर्वरोगाणाम्'** करके वर्णित किया है अर्थात् आम सर्व रोगों का मूल, सर्व रोगों का आश्रय तथा सर्व रोग प्रकोपक है। अगर सर्व रोगों के मूलरूप इस आम को ही निर्माण न होने दिया जाए तो सभी रोगों से हम मुक्ति पा सकते हैं।

अपक्व अन्नरस की उत्पत्ति के कारण– आहार विधि विधान का पालन न करने से हमारे शरीर में आहार का सम्यक् रूप से पाचन नहीं होता तथा उससे निर्मित अपक्व अन्नरस शरीर में अनेक रोगों को उत्पन्न करने वाला सिद्ध होता है। इस अपक्व अन्नरस के विषय में शरीर हमें कुछ विशिष्ट लक्षणों से सूचित भी करता हैं। आपको आश्चर्य हो रहा है न? कि क्या शरीर भी हमें कुछ सूचित करता है? जी हां अगर आपके पास इस प्रकार का रिसीवर है तो आप उसकी बात सुन सकते हैं, समझ सकते हैं तथा समय पर उसका उपाय करके भावी व्याधियों से बच सकते हैं।

गुड़ के साथ दो ग्राम हरड़ का चूर्ण अपक्व अन्न रस के निवारणार्थ उत्तम औषध है।

अपक्व अन्नरस के कुछ शारीरिक लक्षण

शरीर के सभी अंग अवयवों में शिथिलता फलतः कार्य करने के प्रति उत्साह की कमी हो जाती है क्योंकि अपक्व अन्नरस को विष समान लक्षणों वाला बताया गया है। मुख में मधुरता व्याप्त रहती है। मुख से लालस्राव होता रहता है। तंद्रा अर्थात् सुस्ती आती है। शरीर में भारीपन व आलस्य रहता है। चक्कर आता है। अन्न ग्रहण करने की अभिलाषा का अभाव हो जाता है। 'क्लम' सबसे महत्त्वपूर्ण लक्षण है, अर्थात् विना कार्य ही थकावट व मन में अशान्ति रहती है। शारीरिक बलहानि, कब्ज या दस्त की शिकायत रहती है।

इस अपक्व अन्नरस का निर्माण अगर लगातार चलता रहे तो कालान्तर में बारम्बार प्यास लगना, बुखार, संधियों में जकड़ाहट, भारीपन व वेदनायुक्त सूजन, मुख का स्वाद बिगड़ना, शरीर में दाह की अनुभूति, बारम्बार मूत्र त्याग करना, पेट दर्द, निद्रानाश, उल्टी, चक्कर आना, अफारा होना, पेट तना हुआ लगना आदि लक्षणों का प्रादुर्भाव देखने को मिलता है।

अपक्व अन्नरस की चिकित्सा– इन लक्षणों के लिए कारणभूत आहार–विहार का त्याग करें। इसके निवारणार्थ उपवास करना चाहिए। अपक्व अन्नरस के निवारणार्थ आगामी अन्नकाल में अन्न का सर्वथा त्याग करना चाहिए इससे पाचक अग्नि अपचित अन्न को पचाने में समर्थ हो जाती है। ऐसा उपक्रम करने पर भी यदि पेट में भारीपन की अनुभूति हो तो दोषों के पाचन के लिए औषध दी जानी चाहिए। कुछ साधारण उपचार निम्नलिखित है यथा–

- भोजन से पूर्व लवणयुक्त अदरक का प्रयोग लाभदायी रहता है। जिससे जिह्वा व कंठ का विशोधन होता है, पाचक अग्नि प्रदीप्त होती है तथा वह हृदय के लिए भी हितकारी है।
- प्रातःकाल एक ग्राम सोंठ सममात्रा में घी व गुड़ के साथ उष्ण जल से सेवन करें।
- केवल सोंठ का चूर्ण दो ग्राम की मात्रा में गर्म पानी के साथ ले सकते हैं।
- दो ग्राम हिंग्वष्टक चूर्ण घी के साथ भोजन के प्रथम ग्रास में सेवन करने से लाभदायी रहता है।
- गुड़ के साथ दो ग्राम हरड़ का चूर्ण अपक्व अन्न रस के निवारणार्थ उत्तम औषध है।
- जिन व्यक्तियों को पित्तज लक्षणों अर्थात् गर्मी की शिकायत अधिक हो उन्हें अनार के दाने व आँवले का मुरब्बा आदि भोजन के पूर्व में ग्रहण कर लेना चाहिए, पश्चात् भोजन करें।

पाचन संस्थान के लिए लाभकारी आसन– शरीर का किसी एक स्थिति में रहते हुए सुख प्राप्त होना आसन कहलाता है। स्वास्थ्य लाभ के लिए आसन बहुत उपयोगी है। पाचन संस्थान के लिए लाभकारी आसन इस प्रकार है–

- *मंद पाचन शक्ति*– वज्रासन, भुजंगासन, शलभासन।
- *कब्ज*– चक्रासन, हलासन, पश्चिमोत्तानासन, उत्कटासन।
- *पेट में गैस बनना*– पवनमुक्तासन, सर्वांगासन, धनुरासन।
- *शारीरिक थकावट*– अश्वासन, शवासन।
- *तनाव*– शीर्षासन, मत्स्यासन, शवासन। ❑❑

स्वदेशी मेला

अक्टूबर 19–23, 2016, द्वारका (नई दिल्ली)

स्वदेशी जागरण मंच के तत्वावधान में 19–23, अक्टूबर 2016 को सांस्कृतिक स्रोत व शोध संस्थान (CCRT) सेक्टर–7, द्वारका, दिल्ली में स्वदेशी मेले का आयोजित किया गया। इस मेले को आयोजित करने का उद्देश्य जनमानस को अपने चिर–प्राचीन मूल्यों, संस्कारों एवं आदर्शों को याद करना एवं उन पर अमल करने का आह्वान करना था। इस मेले के मुख्य आकर्षण स्वदेशी वस्तुएं, हस्तनिर्मित वस्तुएं, दीपावली की पूजन सामग्री, सजावट का सामान, प्रदर्शनी, आयुर्वेदिक वस्तुएं, कड़ी वस्त्र, कठपुतली, ऊंट की सवारी, कुम्हार, लुहार, एवं बुनकर द्वारा प्रत्यक्ष प्रदर्शन रहा। मेले के मध्य में स्थापित एक झोपडी एवं भगवान शिव के त्रिशूल ने इसकी शोभा में चार चांद लगा दिए थे। हम यह भी कह सकते है कि यह स्थान दर्शकों के लिए एक "Selfie Point" के रूप में था। मेले में कुम्हार व लुहार द्वारा जीवित प्रदर्शन (live demonstration) भी मेले का एक आकर्षण बना हुआ था। जिसमें बच्वें, महिलायें व पुरूषों ने अपने हाथों से मिट्टी के दीये तथा अन्य सामान बनाना सिखा। मेले का समय प्रतिदिन दोपहर 12.00 बजे से रात्रि 10.00 बजे तक रहा।

दिनांक 19 अक्टूबर 2016 को मेले का विधिवत रूप से उद्घाटन हुआ, जिसके लिए प्रातः 10.00 बजे हवन आयोजित किया गया। हवन में प्रो. जगदीश मुखी (माननीय उप–राज्यपाल, अंडेमान–निकोबार), श्री सरोज मित्र (अखिल भारतीय सह–संयोजक), श्री बलराज सिंह, श्री बृजेश, श्री जितेंद्र, श्री गोविन्दराम अग्रवाल, श्री रविंद्र सोलंकी, श्री बृज भूषण आर्य, डा. मनजीत सिंह, श्री नवीन गर्ग, श्री रविंद्र अग्रवाल, श्री शशि तलवार, श्री रामनिवास दहिया, श्री संजय उपाध्याय एवं अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

मेले में 100 से ज्यादा स्टॉल लगाये गए। जिनमें घरों में उपयोगी वस्तुएं, कपड़े, लाइट, दीपावली के लिए दीये तथा साज–सज्जा का सामान, मिठाईयां, साहित्य इत्यादि थे। मुख्यतः पतंजलि, खादी, सुरुचि प्रकाशन, नवज्योति महिला निर्माण समिति, MCD का स्वास्थ्य विभाग जैसे स्टॉल लगाये गए। मेले के कार्यकर्मों को दो भागों में बांटा गया– 1. मंच पर होन वाले, 2. मंच के पीछे होने वाले कार्यक्रम थे।

मेले के मंच के पीछे होने वाले कार्यकर्मों में प्रथम दिवस का मुख्य आकर्षण करवा चौथ था, इसमें लगभग 200 महिलाओं ने विधिवत् रूप से मेले स्थल पर कथा की एवं इसके बाद डांडिया का नृत्य भी किया। मेले का विधिवत् उद्घाटन चौधरी विरेन्द्र सिंह (केंद्रीय इस्पात मंत्री), श्री मनोज तिवारी (सांसद व प्रमुख गायक), डॉ. अश्वनी महाजन (अखिल भारतीय सह–संयोजक), डॉ. बलराम पाणी (प्रधानाचार्य), श्री कमलजीत (दिल्ली–हरियाणा संगठक) एवं श्री जितेंद्र (प्रचारक) ने भारत माता के चित्र के संमुख दीप प्रज्वलन कर किया।

श्री बांके पहलवान ने सभी अतिथिओं को गुलाबी पगड़ी बांधकर उनका स्वागत किया। इसके उपरांत गणेश वंदना, योग, राजस्थानी नृत्य, फोक नृत्य का आयोजन किया गया।

दिनांक 20 अक्टूबर को श्री महेश शर्मा (सांस्कृतिक सलाहकार, हरियाणा सरकार), श्री पवन शर्मा (प्रभारी, मिजोरम प्रांत एवं उपप्रभारी, बिहार प्रांत, भाजपा), श्रीमती स्वरुप आशा नायर (उप–प्रधानाचार्य, बिरला विद्या निकेतन), श्री कमलजीत, श्री अजेय भारती (अ.भा. सहविचार मंडल प्रमुख) ने मेले का उद्घाटन किया। इस दिन मेले का मुख्य आकर्षण ओडिशी नृत्य रहा, जिसे साहित्य कला परिषद् की ओर से प्रस्तुत किया गया।

दिनांक 21 अक्टूबर को मेले के मुख्य आकर्षणों में कवि–सम्मलेन रहा, जिसमें श्री गजेंद्र सोलंकी जैसे राष्ट्रीय कवियों ने भाग लिया। कवियों ने भारत माता, स्वदेशी, भारतीय सेना जैसे मुद्दों पर अपनी कविताएं प्रस्तुत की। आम जनता इस कवि सम्मलेन से बहुत प्रभावित हुए। इस दिन मेले के उद्घाटन में मेजर जनरल पी के सहगल, श्री सतीश

कुमार (उत्तर क्षेत्र, राजस्थान, म.प्र. संगठक), श्री दीपक शर्मा "प्रदीप" (अ.भा. प्रचार प्रमुख), श्री मुरलीधर राव (पूर्व राष्ट्रीय संयोजक–स्वदेशी जागरण मंच तथा राष्ट्रीय महासचिव–भाजपा), श्री धर्मदेव सोलंकी (पूर्व विधायक), श्री सिद्धार्थन उपस्थित रहें। वक्ताओं ने अपने वक्तव्यों में चीनी सामान के दुरूपयोग व उसको त्यागकर देश में बने हुए स्वदेशी सामान का उपयोग करने पर जोर देते हुए अपने विचार प्रस्तुत किये।

मेले में एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। जिसमें स्वदेशी–विदेशी वस्तुओं की तुलना, विदेशी वस्तुओं के उपयोग से होने वाली बीमारियां, कुछ घरेलू नुस्खे, कुछ तथ्य, गौ–माता से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां सम्मिलित थी। यह प्रदर्शनी श्री महेंद्र विक्रम सिंह व श्री अभिषेक के अथक प्रयासों का नतीजा थी। मेले में आयुर्वेदिक पोधों के साथ–साथ उनसे होने वाले उपचार एवं फायदे भी प्रदर्शित किये गए।

स्वदेशी मेले में विदेशी महमानों (पुरुषों व महिलाओं) का भी आना–जाना लगा रहा। वे सभी भारतीय परिधानों से काफी हद तक प्रभावित दिखे।

मेले का चौथा दिन देश भक्ति गीतों के नाम रहा। मेले के उद्घाटन में मुख्य अतिथि श्री शांत प्रकाश जाटव (पूर्व केंद्रीय प्रशिक्षण प्रभारी, भाजपा), श्री श्रीनिवासन (अखिल भारतीय सह–संगठन मंत्री, विद्यार्थी परिषद), श्री आशीष सूद (महामंत्री, दिल्ली बीजेपी), श्री राजेश गहलोत (पूर्व विधायक, मटियाला), श्री पवन राठी, श्री सुमन डागर, श्री राकेश मलिक, श्री रमेश चन्द्र, सुश्री रूबी यादव, श्री राकेश बंसल, श्री सुनील, श्री बृजेश पराशर मौजूद रहें।

सुश्री मनु वंदना के देश भक्ति गीत इस दिन का मुख्य आकर्षण रहे। सुश्री मधुमिता व भानु श्री ने भी मंच से देश भक्ति गीतों की माला पिरोयी, जिसने मेले का माहौल देश भक्ति से ओत–प्रोत हो गया। स्कुल की छात्रा सुश्री डिम्पल ने योग के माध्यम से आज के समाज में होने वाली बिमारियों से बचने व विभिन्न योग मुद्राओं के प्रत्यक्ष प्रदर्शन ने सबको अचंभित कर दिया। स्कूल के अन्य छात्रों ने भी मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया।

मेले के अंतिम पड़ाव में एक विशाल जन समूह देखने को मिला। यह साबित कर रहा था कि किस तरह मेले की उपयोगिता एवं प्रचार दिनोंदिन बढता गया। रविवार का दिन होने की वजह से लोगों का मेले में आना सुबह से ही हो गया। इस दिन आयोजन कार्यक्रम में 25 से अधिक उधमियों ने भाग लिया। उद्घाटन के लिए श्रीमती कृष्णा राज (महिला एवं बाल कल्याण कैबिनेट मंत्री, भारत सरकार) के साथ श्री रमेश बिधुरी (सांसद), श्री करण देव कम्बोज (खाद्य एवं आपूर्ति विभाग मंत्री, हरियाणा सरकार), श्री पवन कुमार (भारतीय मजदूर संघ) ने दीप प्रज्वलन किया। संस्कार भारती के छात्रों ने बहुत ही सुंदर नाट्य प्रस्तुति दी। जिसके बाद राजस्थानी नृत्य प्रस्तुत किया गया। मेले के अंतिम दिन स्वदेशी सामान का विक्रय बहुत जयादा रहा।

मेले के समापन सत्र में श्री रविंद्र सोलंकी ने सभी अतिथियों, प्रतिभागियों, उधमियों, सहयोगियों, CCRT एवं सभी कार्यकर्ताओं का तहे दिल से धन्यवाद दिया, जिनके अथक प्रयासों से यह पंचदिवसीय मेला अपनी चरम सीमा तक पहुंच सका।

मेले के मंच के पीछे होने वाले कार्यक्रमों में 200 से अधिक स्कूली छात्रों ने भाग लिया जिसमें चित्रकला, रंग भरो प्रतियोगिता, रंगोली, रूप–सज्जा, निम्बू दौड़ मुख्यतः रहे। चित्रकला विषय– पर्यावरण बचाव, बेटी बचाओ–बेटी पढाओ, जल ही जीवन है, स्वच्छता मुख्यता रहें। स्कूलों से बहुत ही अधिक मात्रा में छात्रों ने खो–खो एवं कबड्डी प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रत्येक विजय होने वाले को मंच से पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।

मेले की आयोजन समिति में श्री रविंद्र सोलंकी, श्री बृज भूषण आर्य, डॉ. मनजीत सिंह, श्री नवीन गर्ग, सुश्री अनीता पाण्डेय, श्री महेंद्र विक्रम सिंह, श्री रविंद्र अग्रवाल, श्री पंकज शर्मा, श्री शशि तलवार, डॉ. राकेश मलिक, श्री निखिल गोस्वामी, श्री रामनिवास दहिया, रमी सिंह, रतन बिष्ट, राजेन्द्र नेगी, अभिषेक सिंह, इंदु राजपूत, उर्मिला शर्मा व् पश्चिमी विभाग के अन्य कार्यकर्ता रहे। ❑❑

*संचार क्रांति के साथ लोगों के जीवन में भी क्रांतिकारी परिवर्तन आ गये हैं। मोबाईल तो जैसे जीवन का महत्वपूर्ण अंग हो गया हो, हर प्रकार के संदेशों के आदान–प्रदान के लिए मोबाईल एक वरदान यंत्र हो गया है। मोबाईल का ही एक प्रमुख फीचर है–**'व्हाटसएप'**। इस एप के जरिये 24 घंटे लोग एक–दूसरे से जुड़े रहते है। कुछ तो बातें काम की होती है तो कुछ बेकाम की। यहां हम व्हाटसएप के जरिये हस्तांतरित कुछ संदेशों को उपयोगिता के आधार पर यहां प्रस्तुत कर रहे हैं –*

ये कहानी आपको झकझोर देगी 2 मिनट में एक अच्छी सीख अवश्य पढ़ें....

एक बार एक हंस और हंसिनी हरिद्वार के सुरम्य वातावरण से भटकते हुए, उजड़े वीरान और रेगिस्तान के इलाके में आ गये!

हंसिनी ने हंस को कहा कि ये किस उजड़े इलाके में आ गये हैं? यहाँ न तो जल है, न जंगल और न ही ठंडी हवाएं हैं यहाँ तो हमारा जीना मुश्किल हो जायेगा!

भटकते भटकते शाम हो गयी तो हंस ने हंसिनी से कहा कि किसी तरह आज की रात बीता लो, सुबह हम लोग हरिद्वार लौट चलेंगे !

रात हुई तो जिस पेड़ के नीचे हंस और हंसिनी रुके थे, उस पर एक उल्लू बैठा था। वह जोर से चिल्लाने लगा।

हंसिनी ने हंस से कहा– अरे यहाँ तो रात में सो भी नहीं सकते। ये उल्लू चिल्ला रहा है।

हंस ने फिर हंसिनी को समझाया कि किसी तरह रात काट लो, मुझे अब समझ में आ गया है कि ये इलाका वीरान क्यूँ है? ऐसे उल्लू जिस इलाके में रहेंगे वो तो वीरान और उजड़ा रहेगा ही।

पेड़ पर बैठा उल्लू दोनों की बातें सुन रहा था।

सुबह हुई, उल्लू नीचे आया और उसने कहा कि हंस भाई, मेरी वजह से आपको रात में तकलीफ हुई, मुझे माफ़ कर दो।

हंस ने कहा– कोई बात नही भैया, आपका धन्यवाद!

यह कहकर जैसे ही हंस अपनी हंसिनी को लेकर आगे बढ़ा। पीछे से उल्लू चिल्लाया, अरे हंस मेरी पत्नी को लेकर कहाँ जा रहे हो।

हंस चौंका–उसने कहा, आपकी पत्नी? अरे भाई, यह हंसिनी है, मेरी पत्नी है, मेरे साथ आई थी, मेरे साथ जा रही है!

उल्लू ने कहा– खामोश रहो, ये मेरी पत्नी है।

दोनों के बीच विवाद बढ़ गया। पूरे इलाके के लोग एकत्र हो गये। कई गावों की जनता बैठी। पंचायत बुलाई गयी। पंचलोग भी आ गये! बोले– भाई किस बात का विवाद है? लोगों ने बताया कि उल्लू कह रहा है कि हंसिनी उसकी पत्नी है और हंस कह रहा है कि हंसिनी उसकी पत्नी है!

लंबी बैठक और पंचायत के बाद पंच लोग किनारे हो गये और कहा कि भाई बात तो यह सही है कि हंसिनी हंस की ही पत्नी है, लेकिन ये हंस और हंसिनी तो अभी थोड़ी देर में इस गाँव से चले जायेंगे। हमारे बीच में तो उल्लू को ही रहना है। इसलिए फैसला उल्लू के ही हक़ में ही सुनाना चाहिए!

फिर पंचों ने अपना फैसला सुनाया और कहा कि सारे तथ्यों और सबूतों की जांच करने के बाद यह पंचायत इस नतीजे पर पहुंची है कि हंसिनी उल्लू की ही पत्नी है और हंस को तत्काल गाँव छोड़ने का हुक्म दिया जाता है! यह सुनते ही हंस हैरान हो गया और रोने, चीखने और चिल्लाने लगा कि पंचायत ने गलत फैसला सुनाया। उल्लू ने मेरी पत्नी ले ली!

रोते–चीखते जब वह आगे बढ़ने लगा, तो उल्लू ने आवाज लगाई–ऐ मित्र हंस, रुको!

हंस ने रोते हुए कहा कि भैया, अब क्या करोगे? पत्नी तो तुमने ले ही ली, अब जान भी लोगे?

उल्लू ने कहा– नहीं मित्र, ये हंसिनी आपकी पत्नी थी, है और रहेगी! लेकिन कल रात जब मैं चिल्ला रहा था तो आपने अपनी पत्नी से कहा था कि यह इलाका उजड़ा और वीरान इसलिए है क्योंकि यहाँ उल्लू रहता है!

मित्र, ये इलाका उजड़ा और वीरान इसलिए नहीं है कि यहाँ उल्लू रहता है। यह इलाका उजड़ा और वीरान इसलिए है क्योंकि यहाँ पर ऐसे पंच रहते हैं जो उल्लुओं के हक़ में फैसला सुनाते हैं!

शायद 65 साल की आजादी के बाद भी हमारे देश की दुर्दशा का मूल कारण यही है कि हमने उम्मीदवार की योग्यता न देखते हुए, हमेशा ये हमारी जाति का है, ये हमारी पार्टी का है के आधार पर अपना फैसला उल्लुओं के ही पक्ष में सुनाया है, देश क़ी बदहाली और दुर्दशा के लिए कहीं न कहीं हम भी जिम्मेदार है!

9418077435

500 व 1000 रूपये के विकल्प

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने काले धन और नकली करेंसी को रोकने के लिए 500 और 1000 रुपये के करेंसी के नोटों का चलन को पूरी तरह से बंद कर दिया है। इस घोषणा के बाद 500 और 1000 रुपए के नोट का क्या करें।

- ज्यादा से ज्यादा खरीदारी कार्ड से करें
- बड़े लेनदेन के लिए करे चेक और ड्राफ्ट का इस्तेमाल
- इंटरनेट बैंकिंग और ई–वॉलेट का करें इस्तेमाल
- भारतीय रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार देश में इस समय 2 लाख से ज्यादा एटीएम हैं। जबकि 1.5 लाख से ज्यादा पोस्ट ऑफिस हैं। आप नोट बदलने के लिए किसी भी बैंक ब्रांच या पोस्ट ऑफिस में जा सकते हैं।
- 10 दिसंबर से आएंगे नए नोट

क्या है 4 टियर जीएसटी स्लैब?

GST (वस्तु एंव सेवा कर) परिषद ने 4 टियर GST व्यवस्था को अपनी मंजूरी दी है। असल में अप्रत्यक्ष करों के क्षेत्र में प्रस्तावित नई वस्तु एवं सेवाकर (जीएसटी) प्रणाली के तहत 5, 12, 18 और 28 प्रतिशत की चार स्तरीय कर व्यवस्था रखे जाने का निर्णय किया गया है। केंद्र सरकार इसे 1 अप्रैल 2017 से लागू कर सकती है।

महंगाः जीएसटी काउंसिल की मीटिंग ने साफ़ कर दिया है कि लग्जरी कार, तंबाकू और सॉफ्ट ड्रिंक्स पर 28 फीसदी टैक्स लगाया जाएगा। यानी सिगरेट, महंगी कारें और कोल्ड ड्रिंक्स जैसे उत्पादों की कीमत में 30 फीसदी तक का उछाल आ सकता है। इसके अलावा तम्बाकू, एयरेटेड ड्रिंक्स और प्रदूषण फैलाने वाले प्रोडक्ट्स पर एडिशनल सेस लगाने का प्रपोजल भी है।

सस्ताः इस टैक्स प्रणाली में आम इस्तेमाल की चीजों पर सबसे कम 5 प्रतिशत टैक्स लगेगा। इसमें रोजमर्रा की जरूरतों में इस्तेमाल की जाने वाली वस्तुओं पर 6 पर्सेंट की बजाय 5 पर्सेंट टैक्स लगाकर आम लोगों के हितों का ख्याल रखने की कोशिश की गई है। गोल्ड पर टैक्स पर कोई भी फैसला नहीं हो पाया है। साबुन, तेल, टूथपेस्ट जैसे प्रोडक्ट्स 18 पर्सेंट से कम टैक्स

स्लैब में आएंगे और इनकी कीमत बढ़ेगी या घटेगी इसके बारे में कुछ भी कह पाना अभी मुश्किल है। जेटली ने कहा– ”इस स्लैब में ऐसे आइटम्स होंगे, जिनकी खपत आम आदमी ज्यादा करता है। एक स्टैंडर्ड रेट के इनफ्लेशन पर इम्पैक्ट को देखते हुए दो स्टैंडर्ड रेट 12 फीसदी और 18 फीसदी रखी गई हैं।”

अर्थव्यवस्था पर प्रभावः GST लागू होने के बाद करीब 3 साल तक महंगाई का बढ़ना तय माना जा रहा है। मलेशिया में साल 2015 में जीएसटी आने के बाद से महंगाई बढ़ी है। इसका सीधा सा कारण है कि अभी हम रोजमर्रा की सर्विसेस पर 15 प्रतिशत सर्विस टैक्स देते हैं जो GST के बाद अब 18 प्रतिशत होगा। हालांकि पेट्रोल, डीजल, गैस जीएसटी में नहीं होंगे।

जीएसटी लागू होने के बाद वस्तुओं एवं सेवाओं पर सिर्फ तीन टैक्स वसूले जाएंगे। पहला–**सीजीएसटी** यानी सेंट्रल जीएसटी, जो केंद्र सरकार वसूलेगी। दूसरा–**एसजीएसटी**, यानी स्टेट जीएसटी, जो राज्य सरकार अपने यहां होने वाले कारोबार पर वसूलेगी। कोई कारोबार अगर दो राज्यों के बीच होगा तो उस पर **आईजीएसटी** यानी इंटीग्रेटेड जीएसटी वसूला जाएगा। इसे केंद्र सरकार वसूल करेगी और उसे दोनों राज्यों में समान अनुपात में बांट दिया जएगा।

GST से फिलहाल न सरकार का रेवेन्यू बढ़ेगा और न ही घटेगा हालांकि कई सारी चीज़ों पर टैक्स बढ़ जाएगा। राज्यों को इससे कुछ नुकसान झेलना पड़ सकता है लेकिन उनको जितना नुकसान होगा तीन साल तक उसकी भरपाई केंद्र सरकार करेगी। चौथे साल 75 फीसदी और पांचवें साल 50 फीसदी नुकसान की भरपाई केंद्र सरकार करेगी। केंद्र सरकार राज्यों को भरपाई की गारंटी देने के लिए इसके लिए संविधान में भी व्यवस्था करने पर भी तैयार हो गई है।

स्मॉग से बनेगा हीरा

स्मॉग से जैसा हाल इस समय दिल्ली का है, वैसा ही पेइचिंग का भी पहले था। ऐसे में वहां डच आर्टिस्ट डान रूसगार्डी ने स्मॉग फ्री प्रॉजेक्ट शुरू करने की ठानी। जो स्मॉग अभी सांस का दुश्मन बना हुआ है, उससे बेशकीमती हीरा भी बनाया जा सकता है। इस आइडिया को वर्ल्ड इकनॉमिक फोरम ने भी सराहा। यह प्रॉजेक्ट दो

पार्ट्स में काम करेगा। पहला 7 मीटर ऊंचे टॉवर्स स्मॉग को अपने अंदर खींचने का काम करेंगे। यह टॉवर्स प्रदूषित हवा को अपने अंदर लेकर साफ करेंगे। साफ की गई हवा को छोटे टॉवर्स के जरिए पार्क, सड़कों और बाजारों पर छोड़ा जाएगा। जिससे आप को स्वच्छ हवा सांस लेने को मिले।

दूसरे पार्ट में बड़े टॉवर्स में साफ की गई हवा के कार्बन प्लेट्स को आधा घंटा प्रेशर में रखा जाएगा। जिसके बाद उसे हीरे की शक्ल दी जा सकती है। आपने पढ़ा होगा कि हीरा कार्बन का ही एक रूप है। हीरे से बनने वाली जूलरी को बेच कर ऐसे कई टॉवर्स लगाए जा सकते हैं। और हमारे लिए खतरनाक बन रही हवा को एक खुबसूरत शक्ल दी जा सकती है।

चीन में अक्टूबर 2016 में इस प्रॉजेक्ट पर काम करते हुए एक टॉवर लगा दिया गया है। यह टॉवर लगभग 75 फीसदी हवा को साफ कर देता है और हर दिशा में साफ हवा फैलाता है। यह PM 2.5 और PM 10 को भी हवा से निकाल साफ कर रहा है।

1 लीटर में 100 किमी. तय करेगी यह कार

देश को सबसे सस्ती कार देने वाली टाटा मोटर्स जल्द ही भारत को सबसे किफायती कार भी देने वाली है। पैट्रोल और डीजल महंगा होता जा रहा है किफायती कारों का मार्केट ऊपर जाना तय है ऐसे में टाटा अपनी नई कार मेगापिक्सल लेकर आया है। ये टाटा नैनो का ही अपग्रेडेशन है जो कि कई यूनीक कॉम्बिनेशन ने चलते आपको 1 लीटर में 100 किलोमीटर तक का सफ़र करा सकेगी।

हालांकि ये ऑटो सेक्शन में अब तक की इस तरह की सबसे एडवांस टेक्नोलॉजी वाली कार बताई जा रही है। ख़बरों की माने तो इस कार की कीमत 5 से 6 लाख रुपए के बीच हो सकती है। टाटा मेगापिक्सल को 82वें जिनेवा मोटर शो में पहली बार पेश किया गया है और ये साल 2017 तक भारतीय बाजार में लॉन्च की जा सकती है।

सच तो ये है कि टाटा मेगापिक्सल पेट्रोल से नहीं बल्कि बैटरी से चलती है। हालांकि इस कार को कहीं रोक कर चार्ज नहीं करना पड़ता क्योंकि यह चलते हुए भी चार्ज होती है। टाटा की मेगापिकस्ल में 13 किलो वॉट की लीथियम आयन फास्फेट बैटरी लगी है जिसे पेट्रोल इंजन जनरेटर कार के चलते हुए भी चार्ज करता है। पेट्रोल इंजन जनरेटर बेहद कम फ्यूल कंज्यूम करता है जिससे कार का माइलेज सिर्फ पेट्रोल तक सीमित हो जाता है।

किसान खेती में घटा रहा है निवेश

मोदी सरकार भले ही किसानों की आमदनी दोगुना करने का सपना दिखा रही है लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और ही है। किसान अब खेती से जुड़ी एडवांस टेक्नोलॉजी या उससे जुड़े इन्वेस्टमेंट में पैसा लगाने से बच रहा है। लोन में गिरावट इस बात का संकेत है कि किसान के पास इन्वेस्टमेंट के लिए पैसा नहीं बच रहा है। जिसका सीधा असर बैंकों द्वारा दिए जाने वाले घटते टर्म लोन के रुप में दिख रहा है। घटते लोन की चिंता अब आरबीआई को भी सता रही है।

वर्ष 2014 में टर्मलोन का आउटस्टैण्डिंग जहां 1.79 लाख करोड़ रुपए था। वह साल 2016 में गिरकर

1.75 लाख करोड़ रुपए हो गया है।

किसनों का कहना है कि अब खेती में खर्च बहुत ज्यादा है और बचत न के बराबर। साल–साल भर तक गन्ना भुगतान नहीं होता है। ऐसे में अगर किसी यंत्र, सिंचाई साधन आदि के लिए लोन लिया भी जाए तो उसका समय पर भुगतान करना बेहद मुश्किल हो जाता है। यही कारण है कि किसान नई तकनीकों को नहीं अपना पा रहा है। वह केवल अपनी जरूरतों के लिए फसल लोन पर ही फोकस कर रहा है।

82000 करोड़ का रक्षा सौदा

रक्षा मंत्रालय द्वारा 7 नवंबर, 2016 को 82,000 करोड़ रुपए का रक्षा सौदा करने के लिए मंजूरी दी गई। इसमें 83 हल्के तेजस लड़ाकू विमान, 15 हल्के लड़ाकू हेलिकॉप्टर और 464 टी–90 टैंक शामिल हैं। तेजस बनाने वाली Hindustan Aeronautics Limited (HAL) को पहले ही 40 एयरक्राफ्ट बनाने का ऑर्डर दिया जा चुका है। इस साल के अंत तक इंडियन एयरफोर्स को उनकी डिलीवरी की जाने लगेगी। तेजस डील में सरकार ने कुल 50,025 करोड़ रुपए खर्च करेगी। जो हेलिकॉप्टर खरीदे जाएंगे उनकी कीमत लगभग 2,911 करोड़ रुपए है। वह आर्मी और

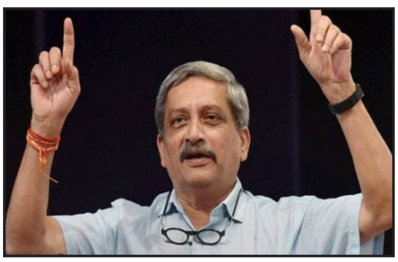

एयरफोर्स दोनों के काम आएंगे। वहीं टैंक्स के लिए सरकार को 13,448 करोड़ रुपए चुकाने होंगे। इसके अलावा रक्षा खरीद परिषद ने आर्मी के लिए 598 ड्रोन खरीदने की बात भी कही है। जुलाई में एयरफोर्स ने तेजस के एक स्कवाड्रन की बढ़ोतरी की थी। एक स्कवाड्रन में 14 से 16 एयरक्राफ्ट होते हैं। कई खामियों के बावजूद एयरफोर्स ने 2015 में तेजस के और एयरक्राफ्ट्स को शामिल करने का फैसला किया था।

तेजस डील को अबतक प्रारंभिक परिचालन मंजूरी (आईओसी) मिली है लेकिन उसे अंतिम परिचालन मंजूरी (एफओसी) का इंतजार है। यह मंजूरी किसी भी वक्त मिल सकती है। 80 और तेजस आने से भारत के पास इनकी संख्या 120 हो जाएगा। हालांकि, इनकी डिलीवरी के बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। तेजस में मिली कमियों में सबसे बड़ी कमी यह थी कि हाल में मिले तेजस में हवा में इंधन भरने की सुविधा नहीं दी गई है।

11 हजार से ज्यादा एनजीओ की मान्यता रद्द

सरकार ने 11,000 से ज्यादा एनजीओ की मान्यता रद्द कर दी है। यह एनजीओ जून के आखिर तक अपना रजिस्ट्रेशन रिन्यू नहीं करा सके थे। मान्यता समाप्त होने के बाद ये एनजीओ विदेश फंडिंग नहीं ले सकेंगे। होम मिनिस्ट्री ने कहा है कि 11,319 एनजीओ का रजिस्ट्रेशन रद्द कर दिया गया है। सरकार की ओर से यह कदम इस साल

30 जून तक फॉरेन कंट्रीब्यूशन रेग्युलेशंस एक्ट (एफसीआरए) 2010 के तहत रजिस्ट्रेशन रिन्यूअल के लिए आवेदन नहीं करने के बाद उठाया गया। उनके रजिस्ट्रेशन की वैलिडिटी 1 नवंबर, 2016 से समाप्त मानी जाएगी।

सरकार की ओर से जिन एनजीओ का रजिस्ट्रेशन रद्द किया गया है, उस लिस्ट में करीब 50 अनाथालय, सैकड़ों स्कूल और संस्थान जैसे इंडियन स्टटिस्टिकल इंस्टीटयूट और स्ट्रीट चिल्ड्रेन के लिए काम करने वाले एनजीओ शामिल हैं। वर्ष 2015 में होम मिनिस्ट्री ने 10,000 एनजीओ के एफसीआरए रजिस्ट्रेशन रद्द किए थे क्योंकि इन्होंने लगातार तीन वर्षों के अपने सालाना रिटर्न दाखिल नहीं किए थे। इनमें से कई एनजीओ निष्क्रिय थे या किसी भी मामले में एफसीआरए रजिस्ट्रेशन नहीं चाहते थे।

केंद्र सरकार ने नॉन फॉर प्रॉफिट आर्गनाइजेशन की संख्या घटाकर 20,500 करने का फैसला किया है। यह संख्या दो साल पहले एफसीआरए 2010 के तहत रजिस्टर्ड 42,500 एनजीओ से आधी है। द फॉरेन कंट्रीब्यूशन रेग्युलेशन एक्ट 2010 ने इसी नाम के 1976 के कानून की जगह ली है। नए कानून के तहत स्थायी रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया को सरकार ने समाप्त कर दिया है। नए कानून के तहत विदेशी फंड चाहने वाले एनजीओ को हर पांच साल पर लाइसेंस रिन्युअल कराना होगा।

चीन ने एक महीने में गंवाए 45.7 अरब डॉलर

चीन का विदेशी मुद्रा भंडार अक्टूबर में लगातार चौथे महीने घटा है। चीन के विदेशों में बढ़ते निवेश और चीनी मुद्रा युआन में लगातार मूल्यह्रास से विदेशी मुद्रा भंडार में गिरावट आ रही है। चीन का विदेशी मुद्रा भंडार अक्टूबर में एक महीने पहले के मुकाबले 45.7

अरब डॉलर घटकर 3,120 अरब डॉलर रह गया। मार्च 2011 के बाद से चीन में विदेशी मुद्रा भंडार का यह सबसे निचला स्तर है। चीन में यह स्थिति तब बनी है जब उसने युआन की गिरावट को थामने के लिये डॉलर की बिकवाली की।

25रू. में होगा अपना घर

मोदी सरकार प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत सस्ते घर खरीदने का मौका दे रही है। इसके लिए आप ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। ऑनलाइन आवेदन 3 नंवबर से शुरू हो गए हैं। इस योजना के तहत मोदी सरकार शहरी इलाकों में गरीबों के लिए 2 करोड़ घर बनाएगी। देशभर में फैले दो लाख से अधिक कॉमन सर्विसिस सेंटर (सीएससी) में से लगभग 60 हजार सेंटर शहरी क्षेत्रों में हैं, जहां तीन नवंबर से मात्र 25 रुपए प्रति आवेदन की दर से ऑनलाइन आवेदन किया जा सकता है। कॉमन सर्विस सेंटर्स पर इस योजना के तहत भरे जाने वाले फॉर्म के लिए आवेदकों को रसीद दी जाएगी, जिसमें आवेदक की फोटो लगी होगी। इस रसीद के जरिए आवेदन की स्थिति जानने में आवेदक को मदद मिलेगी। लाभार्थी ऑनलाइन पीएमएवाई (शहरी) के फायदे के बारे में जानकारी लेने के लिए नजदीकी सेंटर जा सकते हैं। अगर लाभार्थी के पास आधार कार्ड नहीं है तो सेंटर इसे पाने में लाभार्थी की

मदद करेगा। इन सेंटर्न पर जाकर आवेदक 25 रुपए का शुल्क देकर ऑनलाइन आवेदन कर सकता है।

- यह स्कीम लो इनकम ग्रुप (LIG) और इकोनॉमिकली वीकर सेक्शन (EWS) श्रेणी में आने वाले लोगों से जुड़ी हुई है। इस स्कीम में महिलाओं, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों को सीधा लाभ मिलेगा।
- इस स्कीम के तहत हर लाभार्थियों को केंद्र सरकार की ओर से 1 लाख रुपए प्रदान किए जाएंगे।
- हाउसिंग स्टाक के लिए केंद्र सरकार की ओर से अतिरिक्त डेढ लाख रुपए की वित्तीय मदद दी जाएगी।
- प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत घर लेने के लिए लाभार्थी को रियायती दर पर कर्ज मिलेगा। इसके तहत लाभार्थी को 6 लाख रुपए के तक का कर्ज दिया जाएगा। कर्ज की दर 6.5 फीसदी रखी गई है। अगर किसी को 6 लाख से ज्यादा का कर्ज लेना हो तो उसे ब्याज का मार्केट रेट लागू होगा।

दिल्ली स्मॉगः ई–कॉमर्स कंपनियों की चांदी

दीपावली के बाद से राजधानी दिल्ली में फैले स्मॉग के बाद स्नैपडील, फ्लिपकार्ट और ऐमजॉन जैसी ई–कामर्स कंपनियों के प्लैटफार्म पर एयर प्योरिफायरऔर मास्क की बिक्री में जोरदार इजाफा देखने को मिला है। बड़ी संख्या में लोगों ने दिवाली से पहले ही इन उत्पादों की खरीद लिया था, लेकिन दीपावली के बाद तो इनकी

मांग में जोरदार वृद्धि देखने को मिली है। दिलचस्प तथ्य यह है कि शहर के इस पोर्टल ने इस श्रेणी के लिए विशेष स्टोर बनाया है। स्नैपडील का अनुमान है कि इस बार एयर प्योरिफायरके लिए आर्डरों में दस गुना का इजाफा होगा। स्नैपडील पर नवंबर के पहले पांच दिन में कार एयर प्योरिफायरकी बिक्री में 140 प्रतिशत का इजाफा हुआ है।

वाहनों के अलावा औद्योगिक प्रदूषण की वजह से दिल्ली की हवा पिछले कुछ सालों में लगातार खराब हो रही है। एक अन्य ई–कामर्स कंपनी फ्लिपकार्ट पर भी एयर प्योरिफायर तथा मास्क की बिक्री में सालाना आधार पर ढाई गुना की बढ़ोतरी हुई है। देश की सबसे बड़ी ई–कामर्स कंपनी ने कहा कि करीब 50 प्रतिशत एयर प्योरिफायर की मांग दिल्ली से आ रही है। 71 प्रतिशत मांग उत्तर क्षेत्र से है। प्रदूषण से बचाव वाले मास्क की बिक्री में भी जोरदार इजाफा हुआ है। अमेरिकी ई–कामर्स की भारतीय वेबसाइट पर मास्क की मांग में पिछले साल की तुलना में 13 गुना की बढ़ोतरी हुई है।

किसानों के लिए महाराष्ट्र सबसे बेहतर राज्य

देश में कृषि क्षेत्र में सुधारों के आधार पर तैयार किए गए नीति आयोग के सूचकांक में महाराष्ट्र सर्वाधिक कृषक अनुकूल राज्य है। उसके बाद क्रमशः गुजरात और राजस्थान का स्थान है। अपनी इस तरह की पहली कवायद में आयोग ने 'कृषि विपणन और कृषक अनुकूल सुधार सूचकांक' तैयार किया है। यह सूचकांक राज्यों द्वारा कृषि क्षेत्र की नीतियों और कार्यक्रमों में सुधारों की दिशा में की गयी पहल पर आधारित है। एक आधिकारिक बयान के अनुसार, 'सुधारों के क्रियान्वयन के मामले में महाराष्ट्र पहले पायदान पर है। राज्य ने कृषि मंडी विपणन के क्षेत्र में ज्यादातर

सुधारों को क्रियान्वित किया है और यह राज्य अन्य राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों के बीच कृषि कारोबार करने के लिये बेहतर माहौल की पेशकश करता है।' कृषि क्षेत्र में सुधारों के संदर्भ में 29 में से 20 राज्यों का प्रदर्शन खराब है। इनमें पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, पंजाब, असम, झारखंड, तमिलनाडु तथा जम्मू–कश्मीर भी शामिल हैं।

देश में खाद्य सुरक्षा कानून लागू

खाद्य सुरक्षा कानून को अपनाने में देरी करने वाले केरल और तमिलनाडु ने भी इसे नवंबर से लागू कर लिया है। इसी के साथ देशभर के सभी 36 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में खाद्य सुरक्षा कानून लागू हो गया है। इसके लिए केंद्र सरकार को प्रतिवर्ष 1.40 लाख करोड़ रु. बतौर सब्सिडी खर्च करने होंगे। गौरतलब है कि साल 2014 से ही खाद्य सुरक्षा कानून को लागू किए जाने की प्रक्रिया शुरू हो गई थी। उसी वक्त से समय–समय पर विभिन्न राज्यों ने इसे लागू कर लिया था। लेकिन, केरल और तमिलनाडु ने कानून को अब तक नहीं अपनाया था। पूरे देश में इस कानून के बाद करीब 80 करोड़ लोगों को सस्ता अनाज मिलेगा। इसके लिए केंद्र सरकार राज्यों को 45. 5 करोड़ टन अनाज मुहैया कराएगी।❑❑